संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

फरवरी २००४
माघ-फाल्गुन
वि.सं. २०६०

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

शिवरात्रि शिव पर्व है
शिव का होकर शिव को भजने का।
शिव रहते शिवस्वरूप में
तुम भी आया करो आत्मशिव में ॥

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

महाशिवरात्रि : १८ फरवरी

ॐ नमः शिवाय
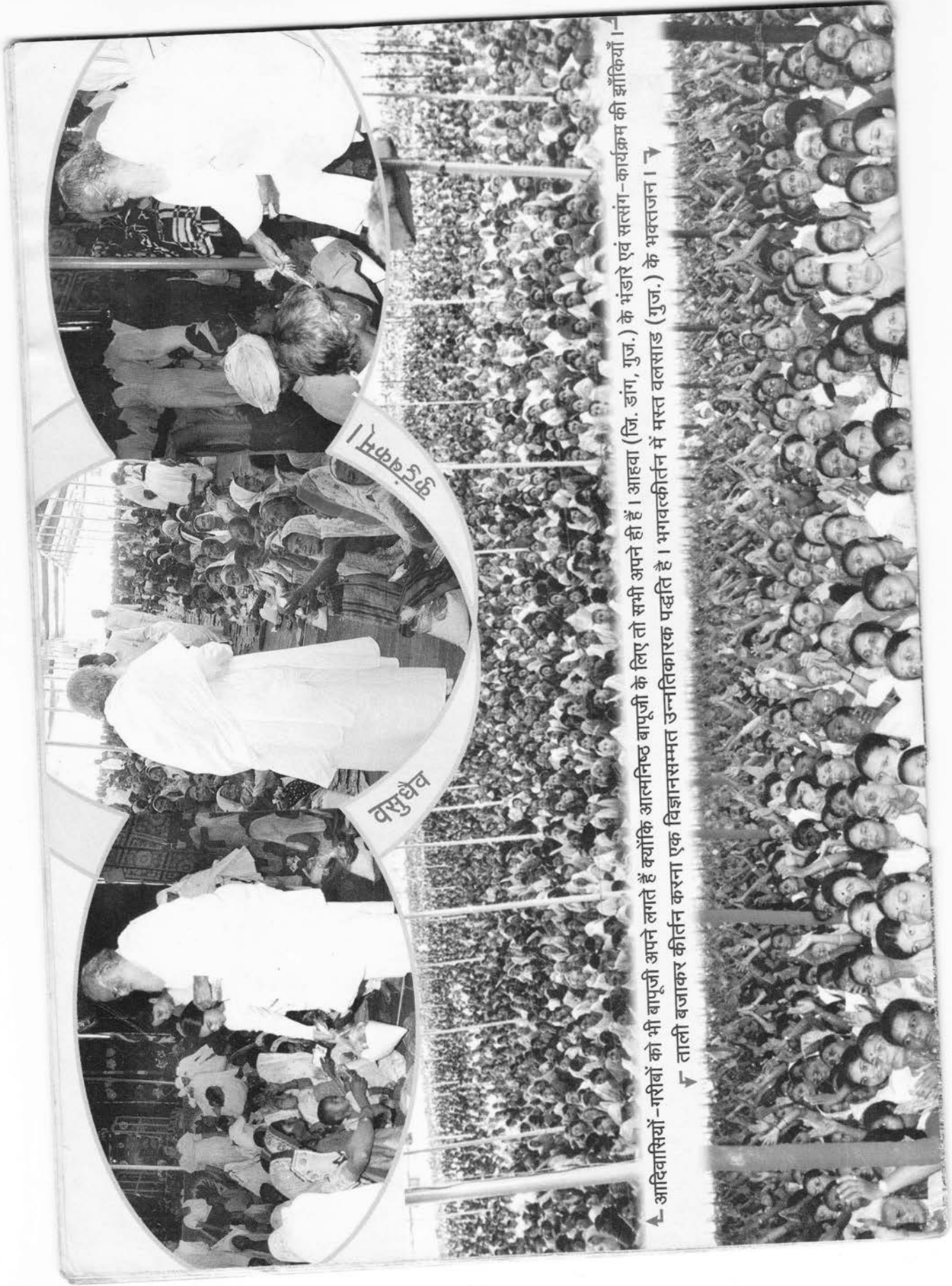
आदिवासियों-गरीबों को भी बापूजी अपने लगते हैं क्योंकि आत्मनिष्ठ बापूजी के लिए तो सभी अपने ही हैं। आहवा (जि. डांग, गुज.) के भंडारे एवं सत्संग-कार्यक्रम की झाँकियाँ।

ताली बजाकर कीर्तन करना एक विज्ञानसम्मत उन्नतिकारक पद्धति है। भगवत्कीर्तन में मस्त वलसाड (गुज.) के भक्तजन।

Ganpat Dave

ऋषि प्रसाद

वर्ष : १४ अंक : १३४
फरवरी २००४ मूल्य : रु. ६-००
माघ-फाल्गुन, वि.सं.२०६०

सदस्यता शुल्क

भारत में
(१) वार्षिक : रु. ५५/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक: रु. २००/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(१) वार्षिक : रु. ८०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १५०/-
(३) पंचवार्षिक: रु. ३००/-
(४) आजीवन : रु. ७५०/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक: US $ 80
(४) आजीवन : US $ 200

कार्यालय **'ऋषि प्रसाद'** श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-३८०००५.
फोन : (०७९) ७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site: www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : कौशिक वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-३८०००५.
मुद्रण स्थल : हार्दिक वेबप्रिंट, राणीप और विनय प्रिंटिंग प्रेस, अमदावाद।
सम्पादक : कौशिक वाणी
सहसम्पादक : प्रे. खो. मकवाणा

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक अथवा सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

अनुक्रम

पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग

सोनी चैनल पर 'संत आसाराम वाणी' सोमवार से शुक्रवार सुबह ७-३० बजे व शनिवार और रविवार सुबह ७-०० बजे

संस्कार चैनल पर 'परम पूज्य लोकसंत श्री आसारामजी बापू की अमृतवर्षा' रोज दोप. २-०० बजे तथा रात्रि ९-४० बजे

साधना चैनल पर 'संत श्री आसारामजी बापू की सत्संग-सरिता' रोज रात्रि ९-०० बजे

आस्था चैनल पर 'संत श्री आसारामजी बापू की अमृतवाणी' सुबह ८-०० दोप. २-३० बजे

हो ली को होली डाल दो...

हो ली (बीती) को होली डाल दो, निश्चिंतता की चाल चलो ।
होता है जो निश्चित है, नश्वर का डर सब टाल दो ॥
गर राग-द्वेष से कर्म हैं, वो कर्म बंधन ही हुआ ।
निष्कामता के कर्म से, सुकर्म ही उन्नत हुआ ॥
होली हुई रंग राग की, तो रंग फीका है पड़ा ।
सतरंग पक्का जान लो, ये रंग बढ़ता ही बढ़ा ॥
होली जलाओ डाल दो, द्वेषी विकारी वृत्तियाँ ।
सुबुद्धि से शोभित बनेंगी, मन की सारी वृत्तियाँ ॥
होली मनाओ प्रेम से, पर प्रेम सत् का हो भला ।
सत् चाहना ऊर्मि उठे, सम्बन्ध नश्वर क्यों भला ॥
होली है खुशियाँ खूब हों, पर व्यक्ति वस्तु से नहीं ।
भीतर भरा आनंद है, आनंद की बौछार हो ॥
होली प्रकाशी जगमगे, एक तत्त्व का विचार हो ।
सत् ज्ञान का झरना बहे, निज आत्मा में वास हो ॥
होली जलाओ डाल दो, इच्छा सभी नाकाम की ।
है काम की ईश भावना, बाकी सभी बेकार की ॥
होली मनाते आये हो, होली मने सत्संग से ।
बाकी के रंग बेकार हैं, होली मने सतरंग से ॥
होली जली प्रकाश की, सत् उन्नति प्रकाश हो ।
एक आत्मा के ताल पे, चिन्तन, मनन, अभ्यास हो ॥
होली है यह संकल्प लो, एक लक्ष्य ऊँचा सत् का हो ।
क्यों आये हो किस काम से, एक तत्त्व का विचार हो ॥
एक तत्त्व गुरु से जान लो, उनकी शरण ही ठान लो ।
गुरु ज्ञान की प्याली चढ़े, जब श्रद्धा गुरु में राम हो ॥
होली धरो देहाध्यास को, 'मैं-मैं' का बकरा मार दो ।
खाली करो उसमें भरो, सत् वाणी सद्गुरु राम की ॥
होली मनायी संत ने, निज आत्मा के रंग से ।
है नित्य उनका नित्य से, सम्बन्ध उनका एक से ॥
होली के रंगों में भरो, सत् भावना सु चाहना ।
सेवा करो निष्कामना, खुद के लिए न चाहना ॥
होली मनायी तब भली, द्रष्टा की खिल जाये कली ।
हो दृश्य से जब सामना, जग जाय वृत्ति साक्षी की ॥
होली मनाये रागी क्या ? उसकी नजर में रागिनी ।
भरता रहे भोग वासना, लाखों डसें फिर नागिनी ॥
होली जली फिर भी अँधेरा, होली मनी तो क्या मनी ।
है आग राखी राग की, होली जले क्या खाक की ?

- रमेश राठोड़

*

पावन होली

आया होली का त्यौहार,
बरसी रंगों की बौछार ।
छलकी प्रभुकरुणा अपार,
भीगी चित चुनरी सारी ॥
हरे गुलाबी नीले पीले,
काले लाल रंग भड़कीले ।
प्रभु प्रेम रसरंग में जी ले,
रामनाम की रंगत न्यारी ॥
दूषित द्वैत-द्वेष के रंग,
सात्त्विक संतजनों का संग ।
उपजे आनंदरस उमंग,
प्रभुनाम की महिमा भारी ॥
प्रभुज्ञान की पावन होली,
सुख स्वरूप साथी हम जोली ।
निर्मल आत्मभाव की चोली,
मन मंदिर में बनवारी ॥
ब्रजधाम में श्याम ने खेली,
संग ग्वाल गोपियन की टोली ।
झूम झूम चित चेतना डोली,
छायी प्रभुनाम खुमारी ॥
गुरुभक्ति का लाल गुलाब,
हर ले दुःख-दर्द रंज मलाल ।
'साक्षी' जीवन हो खुशहाल,
महकी हृदय की फुलवारी ॥

- जानकी ए. चंदनानी

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

शिवरात्रि व्रत-महिमा

[महाशिवरात्रि : १८ फरवरी]

'स्कंद पुराण' के केदार खंड में शिवरात्रि व्रत-महिमा की एक कथा आती है :

एक चांडाल पशु-पक्षियों को मारता, उनका खून पीता, मांस खाता और उनका चमड़ा बेचकर जीवन का निर्वाह करता था। उसने एक विधवा ब्राह्मणी को फुसलाकर अपने पास रख लिया। उसके गर्भ से एक बालक पैदा हुआ जिसका नाम रखा गया - दुस्सह। दुस्सह भी अपने पिता की तरह ही दुष्कर्म करने लगा।

एक बार उसे जंगल में शिकार के लिए भटकते-भटकते रात हो गयी और वह रास्ता भूल गया। एक पेड़ पर चढ़कर उसने चारों ओर देखा तो कहीं दूर एक दिया जल रहा था। भूख-प्यास से व्याकुल दुस्सह वहाँ गया।

वहाँ एक छोटा-सा शिवमंदिर था और एक संत की कुटीर थी। संत पूजा में बैठे हुए थे। 'अब उठेंगे... अब उठेंगे...' इस प्रकार राह देखते-देखते पूरी रात बीत गयी। दैवयोग से वह रात्रि शिवरात्रि थी। दुस्सह का अनजाने में शिवरात्रि-जागरण हो गया और खाने-पीने के लिए कुछ न मिलने से उपवास भी हो गया। सुबह हुई तब संत ने दुस्सह से कहा : ''बेटा ! नहा ले।''

दुस्सह ने नहा-धोकर संत के कहे अनुसार 'ॐ नमः शिवाय' का उच्चारण कर शिवजी को बिल्वपत्र चढ़ाये। उसे उन संत का सत्संग मिला।

समय पाकर दुस्सह मर गया। शिवरात्रि-जागरण, संतदर्शन, उनके दो वचनों का श्रवण और शिवमंत्र के जप के अलावा उसके जीवन में और कोई पुण्य न था। इस पुण्य से वह अगले जन्म में राजा विचित्रवीर्य बना।

कहाँ तो एक शिकारी, जो खरगोश, हिरण आदि प्राणियों के पीछे मारा-मारा फिरता था और कहाँ संतदर्शन, अनजाने में शिवरात्रि-जागरण और शिवमंत्र के जप के प्रभाव से अगले जन्म में एक राजा बन गया !

उसकी पूर्वजन्म की स्मृति बनी रही, जिसके प्रभाव से इस जन्म में भी वह शिवजी का पूजन-अर्चन करता था। भगवान शिव और संतों में उसकी प्रीति थी। उसके राज्य में लोग बोलते थे कि 'यह शिवभक्त राजा विचित्रवीर्य का राज्य है।'

राजा विचित्रवीर्यने राज्य तो किया किंतु राज्य के अहंकार से फूला नहीं। भोगों में तो रहा किंतु भोगों की दलदल में फँसा नहीं। राजगद्दी पर तो रहा किंतु राजगद्दी के दोष उसमें आये नहीं। उसके दिल में तो भगवान शिव की गद्दी थी और संतों का सत्संग था !

उसने कई शिवमंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया, साधु-संतों की सेवा की और शिवभक्ति का प्रचार किया। इन सबका इतना भारी पुण्य हुआ कि मृत्यु के पश्चात् राजा सायुज्य मुक्ति को प्राप्त हुआ। पुण्य के प्रभाव से उसने शिवजी की लीला में सहयोग देने के लिए शिवजी से ही दिव्य जन्म प्राप्त किया।

दक्ष के यज्ञ में जब सती ने योगशक्ति से अग्नि प्रकट करके शरीर छोड़ दिया, तब दक्ष के यज्ञ का ध्वंस करने के लिए शिवजी ने अपनी जटा उखाड़कर उसे पर्वतशिखर पर क्रोधपूर्वक दे मारा। उसीसे वीरभद्र का प्राकट्य हुआ। वीरभद्र पूर्वकाल का राजा विचित्रवीर्य ही था। शिवजी ने उसे दक्ष का यज्ञ-ध्वंस करने के लिए भेजा। यज्ञ-ध्वंस करके जब वीरभद्र कनखल से कैलास जा रहे थे, तब हरिद्वार और ऋषिकेश के बीच में एक स्थान पर उन्होंने थोड़ा आराम किया था। बाद में वहाँ पर उनका मंदिर बनाया गया, जो आज भी मौजूद है। उस स्थान के पास हरिद्वार से ऋषिकेश जानेवाली बसें रुकती हैं। वह जगह 'वीरभद्र' नाम से प्रसिद्ध है। शिवभक्ति की कैसी महिमा है कि उसके प्रभाव से एक शिकारी भगवान वीरभद्र होकर पूजे जा रहे हैं !

हो ली को होली डाल दो...

हो ली (बीती) को होली डाल दो, निश्चिंतता की चाल चलो।
होता है जो निश्चित है, नश्वर का डर सब टाल दो॥
गर राग-द्वेष से कर्म हैं, वो कर्म बंधन ही हुआ।
निष्कामता के कर्म से, सुकर्म ही उन्नत हुआ॥
होली हुई रंग राग की, तो रंग फीका है पड़ा।
सतरंग पक्का जान लो, ये रंग बढ़ता ही बढ़ा॥
होली जलाओ डाल दो, द्वेषी विकारी वृत्तियाँ।
सुबुद्धि से शोभित बनेंगी, मन की सारी वृत्तियाँ॥
होली मनाओ प्रेम से, पर प्रेम सत् का हो भला।
सत् चाहना ऊर्मि उठे, सम्बन्ध नश्वर क्यों भला॥
होली है खुशियाँ खूब हों, पर व्यक्ति वस्तु से नहीं।
भीतर भरा आनंद है, आनंद की बौछार हो॥
होली प्रकाशी जगमगे, एक तत्त्व का विचार हो।
सत् ज्ञान का झरना बहे, निज आत्मा में वास हो॥
होली जलाओ डाल दो, इच्छा सभी नाकाम की।
है काम की ईश भावना, बाकी सभी बेकार की॥
होली मनाते आये हो, होली मने सत्संग से।
बाकी के रंग बेकार हैं, होली मने सतरंग से॥
होली जली प्रकाश की, सत् उन्नति प्रकाश हो।
एक आत्मा के ताल पे, चिन्तन, मनन, अभ्यास हो॥
होली है यह संकल्प लो, एक लक्ष्य ऊँचा सत् का हो।
क्यों आये हो किस काम से, एक तत्त्व का विचार हो॥
एक तत्त्व गुरु से जान लो, उनकी शरण ही ठान लो।
गुरु ज्ञान की प्याली चढ़े, जब श्रद्धा गुरु में राम हो॥
होली धरो देहाध्यास को, 'मैं-मैं' का बकरा मार दो।
खाली करो उसमें भरो, सत् वाणी सद्गुरु राम की॥
होली मनायी संत ने, निज आत्मा के रंग से।
है नित्य उनका नित्य से, सम्बन्ध उनका एक से॥
होली के रंगों में भरो, सत् भावना सु चाहना।
सेवा करो निष्कामना, खुद के लिए न चाहना॥
होली मनायी तब भली, द्रष्टा की खिल जाये कली।
हो दृश्य से जब सामना, जग जाय वृत्ति साक्षी की॥
होली मनाये रागी क्या ? उसकी नजर में रागिनी।
भरता रहे भोग वासना, लाखों डसें फिर नागिनी॥
होली जली फिर भी अँधेरा, होली मनी तो क्या मनी।
है आग राखी राग की, होली जले क्या खाक की ?

- रमेश राठोड़

*

पावन होली

आया होली का त्यौहार,
बरसी रंगों की बौछार।
छलकी प्रभुकरुणा अपार,
भीगी चित चुनरी सारी॥

हरे गुलाबी नीले पीले,
काले लाल रंग भड़कीले।
प्रभु प्रेम रसरंग में जी ले,
रामनाम की रंगत न्यारी॥

दूषित द्वैत-द्वेष के रंग,
सात्त्विक संतजनों का संग।
उपजे आनंदरस उमंग,
प्रभुनाम की महिमा भारी॥

प्रभुज्ञान की पावन होली,
सुख स्वरूप साथी हम जोली।
निर्मल आत्मभाव की चोली,
मन मंदिर में बनवारी॥

ब्रजधाम में श्याम ने खेली,
संग ग्वाल गोपियन की टोली।
झूम झूम चित चेतना डोली,
छायी प्रभुनाम खुमारी॥

गुरुभक्ति का लाल गुलाब,
हर ले दुःख-दर्द रंज मलाल।
'साक्षी' जीवन हो खुशहाल,
महकी हृदय की फुलवारी॥

- जानकी ए. चंदनानी

रंगों का पर्व : होली

[होली : ६ मार्च]

होलिकोत्सव ने हजारों टूटे दिलों को जोड़ा है। लाखों अशांतों को शांति बख्शी है। करोड़ों अहंकारियों को अहंकारशून्य करके नैसर्गिक (स्वाभाविक) जीवन जीने की प्रेरणा दी है। करोड़ों लोगों की दीन भावना कि 'ये बड़े सेठ हैं, साहब हैं और हम छोटे हैं।' को मिटाया है।

लोग या तो आपसी मनमुटाव से पैदा हुए द्वेष को पकड़ते हैं या प्रिय वस्तु के राग को पकड़ते हैं। लेकिन भैया ! न मनमुटाव के द्वेष को पकड़ो न प्रिय वस्तु के राग को पकड़ो, जो हो ली सो हो ली... अपने चित्त को कहीं चिपकने न दो।

वैदिक काल में लोग 'जैसे अग्नि में डाली गयी वस्तु भस्मसात् हो जाती है, वैसे ही हमारे जीवन के दोष भस्म हो जायें।'- ऐसा शुभ संकल्प करके होलिकोत्सव मनाते और एक-दूसरे के प्रति हुए मनमुटाव को मन से निकाल देते कि 'चलो, जो हुआ सो हुआ...' एक-दूसरे से गले मिलते कि 'हो ली सो हो ली...' एक-दूसरे की रंग-पिचकारी से आपसी मनमुटाव निकल जाता तथा जीवन में प्रसन्नता और आनंद छा जाता था।

होली का आगमन वसंत ऋतु में होता है। इस ऋतु में शरीर का कफ पिघलने के कारण स्वाभाविक ही आलस्य की वृद्धि होती है। महर्षि सुश्रुत ने वसंत को कफ-प्रकोपक ऋतु माना है :

कफश्चितो हि शिशिरे वसन्तेऽर्कांशु तापितः।
हत्वाग्निं कुरुते रोगानतस्तं त्वरया जयेत् ॥

'शिशिर ऋतु में इकट्ठा हुआ कफ वसंत में पिघल-पिघलकर कुपित होकर जुकाम, खाँसी, श्वास, दमा आदि नाना प्रकार के रोगों की सृष्टि करता है।'

इसका शमन करने के लिए कहा गया है :

तीक्ष्णैर्वमननस्याद्यैर्लघुरूक्षैश्च भोजनैः।
व्यायामोद्वर्तघातैर्जित्वा श्लेष्माणमुल्बणम् ॥

'तीक्ष्ण वमन, तीक्ष्ण नस्य, लघु रूक्ष भोजन, व्यायाम, उबटन और आघात आदि का प्रयोग कफ को शांत करता है।'

होली के दिन किया जानेवाला गाना-बजाना, कूदना-फाँदना, भागना-दौड़ना आदि सब ऐसी ही क्रियाएँ हैं जिनसे कफ-प्रकोप शांत हो जाता है और सहसा कोई कफजन्य रोग या अन्य बीमारी नहीं होती। कूदने-फाँदने का यह त्यौहार 'होलिकोत्सव' स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव डालता है।

होली रंगों का त्यौहार है। इस पर्व पर जिस रंग के प्रयोग का विधान शास्त्रकारों ने किया है वह है पलाश के फूलों (टेसुओं) का रंग। शास्त्रों की बातें निराधार नहीं हैं। उनके पीछे दूरद्रष्टा ऋषियों की अपने अंतरात्मा में गोता लगाकर खोज करने की गहन दृष्टि है। हमारी संस्कृति में पलाश एक पुनीत वृक्ष माना जाता है। ब्रह्मचारी को उपनयन के समय पलाश का ही दंड धारण करवाया जाता है एवं सर्व-साधारण के लिए यज्ञार्थ समिधा भी पलाश की ही बतलायी गयी है। प्राचीन काल में गुरुकुलों में विद्याध्ययन करने आनेवाले विद्यार्थियों को पलाश का दण्ड दिया जाता था। वे बूढ़े तो नहीं थे, फिर पलाश का दण्ड क्यों दिया जाता था ? क्योंकि पलाश का दण्ड धारण करने से मानसिक संतुलन होता है।

पलाश के फूलों से तैयार किया गया रंग एक प्रकार से उसके फूलों का अर्क ही होता है। उस रंग में भीगा हुआ कपड़ा शरीर पर डाल दिया जाय तो रंग शरीर के रोमकूपों के द्वारा आंतरिक स्नायुमंडल पर अपना प्रभाव डालता है और संक्रामक बीमारियों को शरीर के पास फटकने तक नहीं देता। शरीर की सप्तधातुओं, सप्तरंगों को मदद करता है ताकि शरीर अशुद्ध न हो तथा व्यक्ति चिड़चिड़ापन और रोगों का शिकार न हो।

'यज्ञ मधुसूदन' के अनुसार :

एतत्पुष्पं कफं पित्तं कुष्ठं दाहं तृषामपि।
वातं स्वेदं रक्तदोषं मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत् ॥

'पलाश के फूल कुष्ठ, दाह, वात, पित्त,

कफ, तृषा, रक्तदोष एवं मूत्रकृच्छ आदि रोगों का नाश करने में सहायक हैं।'

सिंघाड़े के आटे से तैयार किया गया गुलाल भी ऐसी ही पवित्र वस्तुओं में से है। प्राचीन भारत की होली में पलाश के पुष्पों का रंग, गुलाल, अबीर और चंदन का ही उपयोग किया जाता था। **वर्तमान में जिन रंगों का प्रयोग किया जाता है उनका निर्माण विभिन्न रासायनिक तत्त्वों (केमिकल्स) से होता है, जो श्वास एवं रोमकूपों द्वारा भीतर जाकर शरीर को बड़ी हानि पहुँचाते हैं।** अतः इन रासायनिक रंगों से सावधान रहें।

होली के बाद सूर्य की किरणें अधिक तेज हो जाती हैं और शरीर पर हानिकारक प्रभाव डालती हैं। पलाश के फूलों आदि से बने प्राकृतिक रंग से होली खेलने से हमारा शरीर एक ऐसी सुरक्षा-पर्त बना लेता है, जो गर्मी के दिनों में सूर्य की तेज धूप से हमारी त्वचा की रक्षा करती है। सूर्य के प्रकाश से सात रंग प्राप्त होते हैं। प्राकृतिक रंग इनका समन्वय कर सूर्यप्रकाश से हमारे शरीर पर होनेवाले हानिकारक प्रभाव को नियंत्रित करते हैं, ताकि सूर्य की तेज धूप हमें गर्मी की चपेट में न ले ले। प्राकृतिक रंगों से ग्रह-बाधाओं का शमन भी होता है।

गर्मी में लू लगने की संभावना ज्यादा होती है। पहले के जमाने में पगड़ी पहनी जाती थी व उसका एक सिरा लम्बा रखा जाता था ताकि रीढ़ की हड्डी ढकी रहे क्योंकि रीढ़ की हड्डी को धूप लगती है तो उसका ज्यादा हानिकारक प्रभाव पड़ता है। इसीलिए पगड़ी का आविष्कार हुआ था।

प्रत्येक व्यक्ति की आभा (ओरा) का अपना रंग होता है। अभी तो ऐसे कैमरों का आविष्कार हो चुका है जो आपकी तस्वीर के साथ यह भी बता देते हैं कि आपके शरीर में कौन-सा रंग ज्यादा सक्रिय है, आपका स्वभाव कैसा है और आपको क्या रोग है ? फिर आपकी आभा के रंग के अनुसार उपचार किया जाता है। इसे 'किरलियन फोटोग्राफी' कहते हैं।

ऐसी तस्वीर निकालनेवाले लोग मेरे पास भी आये थे। उन्होंने ५७६ प्रभावशाली व्यक्तियों की तस्वीरें यह जानने हेतु ली थीं कि उनकी आभा किस रंग की है। उन्होंने मुझे बताया कि 'बापूजी ! हमने ५७६ प्रसिद्ध व्यक्तियों की तस्वीरें ली हैं किंतु आपकी आभा तो विशेष प्रभावशाली है।'

रंग का बड़ा प्रभाव पड़ता है। लाल रंग के बल्ब कमरे में लगाने से उसमें रहनेवाले का स्वभाव चिड़चिड़ा होने लगता है। इसलिए कमरे में पारदर्शक, आसमानी अथवा हरे रंग का बल्ब लगाओ ताकि कमरे में रहनेवाले आनंदित रहें।

होली के अवसर पर प्राकृतिक रंग शरीर पर लगने से शरीर को तो लाभ होता ही है किंतु मन को भी उल्लास और आनंद की तरंगें मिलती हैं। होलिकोत्सव आपके तन और मन को झंझटप्रूफ, अशांतिप्रूफ और रोगप्रूफ बनाने में सहायता करता है।

सूरत आश्रम में होली शिविर के अवसर पर गंगा आदि तीर्थों का जल मिलाकर पलाश के फूलों से सात्त्विक ढंग से रंग बनाया जाता है। बड़ी-बड़ी फुहारों के द्वारा इस प्राकृतिक रंग का लाभ उपस्थित भक्तों को तो मिलता ही है, साथ ही उन्हें कुछ पैकेट भी दिये जाते हैं जिससे पड़ोस व घरवाले लोग भी उसे अपनी त्वचा पर घर बैठे लगा लें और उन्हें भी सप्तरंगों, सप्तधातुओं के क्षोभ से रक्षा हेतु कवच प्राप्त हो जाय।

प्राकृतिक पुष्पों के रंग से होली खेलने की परंपरा वर्षों से है। मैंने यह नयी परंपरा नहीं चलायी कि 'पलाश के फूल लाओ, उसीसे होली खेलें।' यह मेरी अपनी खोज नहीं है किंतु जिनको सब अपने लगते हैं उन ऋषि-मुनियों की खोज को मैंने स्वीकार किया है।

इस पवित्र, स्वास्थ्यवर्धक उत्सव को मनचले लोग विकृत ढंग से मनाने लगे हैं और उन्हींके पीछे समाज घसीटा जा रहा है। हानिकारक केमिकल्स से तथा सूर्य की तेज किरणों से सप्तधातुओं एवं

सप्तरंगों का संतुलन विकृत हो जाता है। जिससे मानसिक खिन्नता, त्वचा तथा नेत्र आदि के रोग होते हैं। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है। जो वैदिक ढंग से होली नहीं खेलते, वे ज्यादा अशुद्धता के शिकार होते हैं। उन लोगों में असंतुलन, चिड़चिड़ापन और आत्महत्याओं की संख्या अधिक पायी जाती है। इनसे बचने हेतु ही प्राचीन काल में पलाश के फूलों से बने रंग से होली खेली जाती थी। पलाश के फूलों में सप्तधातुओं, सप्तरंगों को संतुलित करने के गुण पाये गये हैं। जिनसे तन एवं मन की शुद्धता की रक्षा होती है।

पलाश के ये ही गुणधर्म पलाश के फूलों के रंग से पाने का एवं हरि कीर्तन द्वारा हरिमय वातावरण में उल्लास मनाने का उत्सव है 'होलिकोत्सव' ! इस प्रकार वैदिक ढंग से मनायी गयी होली स्वास्थ्य की रक्षा करती है। भारत में अति प्राचीन काल से मनाया जा रहा यह उत्सव भारतीय संस्कृति की अनमोल देन है। यह केवल भारत में ही नहीं मनाया जाता बल्कि विश्व के कई देशों में अलग-अलग नामों से मनाया जाता है।

हम सजातीय विचारों अर्थात् आत्मा की ओर ले जानेवाले विचारों को भूल जाते हैं और विजातीय विचारों अर्थात् संसार के विचारों का स्वागत करते हैं क्योंकि जितना महत्त्व हम नश्वर संसार का समझते हैं उतना परमात्म-चिंतन का, परमात्म-प्रसाद का नहीं समझते।

सत्संग सुनकर उसका मनन, निदिध्यासन करना चाहिए। निदिध्यासन क्या है ? सजातीय प्रवाहश्च विजातीय तिरस्कृतः। जो विचार आत्मज्ञान-सम्बन्धी हैं उनका प्रवाह चालू रहे और उन्हींके अनुरूप अन्य विचार बनते रहें तथा जो बातें एवं व्यवहार आत्मज्ञान से नीचे के हैं उन्हें हटाते जायें।

- पूज्य संत श्री आसारामजी बापू

अद्वैत होली

होली जली तो क्या जली, पापिन अविद्या नहिं जली।
आशा जली नहीं राक्षसी, तृष्णा पिशाची नहिं जली ॥
झुलसा न मुख आसक्ति का, नहिं भस्म ईर्ष्या की हुई।
ममता न झोंकी अग्नि में, नहिं वासना फूँकी गयी ॥

होली अगर हो खेलनी, तो संत सम्मत खेलिये।
संतान शुभ ऋषि-मुनिन की, मत संत आज्ञा पेलिये ॥
सच को ग्रहण कर लीजिये, जो झूठ हो तज दीजिये।
सच झूठ के निर्णय बिना, नहीं काम कोई कीजिये ॥

होली हुई तब जानिये, संसार जलती आग हो।
सारे विषय फीके लगें, नहिं लेश उनमें राग हो ॥
हो शांति कैसे प्राप्त निशदिन, एक यह ही ध्यान हो।
संसार दुःख कैसे मिटे, किस भाँति से कल्याण हो ॥

होली हुई तब जानिये, पिचकारि सद्गुरु की लगे।
सब रंग कच्चे जाँय उड़, यक रंग पक्के में रंगे ॥
नहिं रंग चढ़े फिर द्वैत का, अद्वैत में रंग जाय मन।
है सेर जो चालीस सो, ही जानियेगा एक मन ॥

होली हुई तब जानिये, श्रुति वाक्य जल में स्नान हो।
विक्षेप मल सब जाय धुल, निश्चिंत मन अम्लान हो ॥
शोकाग्नि बुझ निर्मूल हो, मति स्वस्थ निर्मल शांत हो।
शीतल हृदय आनंदमय, तिहुँ पाप का पूर्णांत हो ॥

होली हुई तब जानिये, सब दृश्य जलकर छार हो।
अज्ञान की भस्मी उड़े, विज्ञानमय संसार हो ॥
'हो' मांहिं हो लवलीन सब, है अर्थ होली का यही।
बाकी बचे सो तत्त्व अपना, आप सबका है वही ॥

भोला ! भली होली भयी, भ्रम भेद कूड़ा बह गया।
नहिं तू रहा नहिं मैं रहा, था आप सो ही रह गया ॥
अद्वैत होली चित्त देकर, नित्य जो नर गायेगा।
निश्चय अमर हो जायेगा, नहिं गर्भ में फिर आयेगा ॥

- भोले बाबाजी

उनकी होली तो है निराली जो है माँग भरी।
साथ फिरती है कई रंग कई राग भरी ॥
अपनी होली तो उसी यार की है राग भरी।
हम फकीरों की सदा होली है बैराग भरी ॥

श्री रामकृष्ण की तत्त्वनिष्ठा

[श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती - २१ फरवरी]

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

रामकृष्ण परमहंस को जीवन के अंतिम दिनों में गले का कैंसर हो गया था। गले में बड़ी पीड़ा थी और शरीर इतना जीर्ण-शीर्ण हो गया था कि केवल हड्डियाँ और चमड़ा दिखे, बस। उन्हें शरीर की सुधि न थी।

उन महापुरुष के महाप्रयाण के दो दिन पहले नरेन्द्र के मन में आया कि 'जो राम और कृष्ण हुआ था, वही अब रामकृष्ण होकर आया है।' इस प्रकार ये बारम्बार कहा तो करते हैं परंतु इनके इस कष्ट को देखकर मन में संशय हुए बिना नहीं रहता। इस समय यदि ये पुनः वैसा ही कह दें तो इनका यह कहना मैं सत्य मानूँगा।'

नरेन्द्र के मन में यह विचार आया और एकाएक रामकृष्ण गंभीर स्वर में बोल उठे : ''क्या अभी तक शंका है ? पक्का ध्यान में रख कि जो राम हुआ था, जो कृष्ण हुआ था वही अब रामकृष्ण हुआ है।''

नरेन्द्र का सिर झुक गया, विवेक जग गया और वे विवेकानंद हो गये। वे अपने प्रवचनों में कहते कि 'भाइयो ! मर्यादा की स्थापना करने के लिए जो दशरथनंदन होकर आये, नंद-यशोदा के लाड़ले होकर जो प्रेमावतार देवकीनंदन आये वे ही परब्रह्म श्रीराम और श्रीकृष्ण मेरे सद्गुरु होकर आये थे। उन्हीं श्री सद्गुरुदेव की प्रसादी मैं आपको बाँट रहा हूँ।'

जो गुरु को शरीर मानेगा वह स्वयं शरीर से पार कैसे जायेगा ? जो गुरु को कर्ता-भोक्ता मानेगा और गुरु में दोष देखने की कुबुद्धि रखेगा वह निर्दोष कैसे होगा ? **गुरु के दोष देखने के लिए शिष्य नहीं बना जाता है, गुरु के गुरुत्व में जागने के लिए शिष्य बना जाता है।**

श्री रामकृष्ण को किसीने कहा कि 'आप माँ को बुलाते थे और मूर्ति में से माँ प्रकट हो जाती थीं। आप चख-चखकर माँ को भोजन खिलाते थे और माँ खा लेती थीं। आप सूँघ-सूँघकर पुष्प चढ़ाते थे और माँ पुष्प स्वीकार करती थीं। ऐसी माँ को छोड़कर आपने तोतापुरी के चक्कर में पड़ने का कैसे सोचा ? वे तो परसों फलानी स्त्री के घर पर रहे थे, उसीके हाथ का भोजन किया था। वे तो ऐसे हैं... वैसे हैं...'

इस पर श्री रामकृष्ण ने जो जवाब दिया वह गुरुभक्तों को अपने हृदय में अंकित करने जैसा है। श्री रामकृष्ण ने कहा : 'मेरे गुरु कलालखाने में जायें, फिर भी मेरे गुरु नंदराय हैं। गुरु क्या करते हैं वह नहीं, वे क्या कहते हैं वह मैं जानता हूँ।'

ऐसे सत्शिष्य फिर सत्शिष्य नहीं बचते, सद्गुरु हो जाते हैं ! धन्य हैं ऐसे सत्शिष्यों के माता-पिता, कुल-गोत्र ! दोषदर्शन करनेवाले तो अभागे ही रह जाते हैं। शास्त्र कहते हैं : **मूरख हृदय न चेत यद्यपि गुरु मिलहिं बिरंचि सम।** ऐसे मूर्ख शिष्यों को ब्रह्मवेत्ता गुरु मिलते हैं तो भी आध्यात्मिक लाभ नहीं उठाते। उनके क्रिया-कलापों को अपनी तुच्छ मति से तौलते रहते हैं।

शर्यातिं च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमाश्विनौ।
भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते॥

भोजन के पश्चात् (जो भी व्यक्ति) शर्याति, सुकन्या, च्यवन, इन्द्र एवं दोनों अश्विनी कुमारों का स्मरण करता है, उसकी आँखों का तेज कम नहीं होता।

गीले हाथों से नेत्रों का स्पर्श करना भी लाभप्रद है।

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

कुत्ते की तीर्थयात्रा !

जीवात्मा की प्रभुभक्ति कभी व्यर्थ नहीं जाती। शरीर बदलता है फिर भी स्मृति बनी रहती है।

बाबा रामदेव की स्मृति में हर साल जैसलमेर (राजस्थान) में मेला लगता है। एक बार बनासकाँठा से कुछ भक्त मेले में जाने के लिए निकले। ८० किलोमीटर की यात्रा थी। यात्री पैदल ही गाते-बजाते निकले, साथ में एक कुत्ता भी हो गया। रास्ते में यात्री भोजन करते तो उस कुत्ते को भी देते किंतु वह कुत्ता कुछ न खाता। ८० कि.मी. चलते-चलते कुत्ता दुबला-पतला हो गया। वे लोग जब जैसलमेर पहुँचे तब रात हो चुकी थी।

यात्रियों में से किसीने व्यवस्थापक से कहा : ''भाई ! हम तो सुबह दर्शन कर लेंगे। किंतु जब तक हमारा यह मेहमान बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन नहीं करेगा तब तक अन्न नहीं लेगा, कई दिनों से भूखा है।''

व्यवस्थापक ने पूछा : ''ऐसा कौन-सा मेहमान है ?''

''यह कुत्ता है।'' - ऐसा कहकर यात्रियों ने सारी घटना बता दी। व्यवस्थापक ने सहमति दी। कुत्ते ने बाबा रामदेव की समाधि के दर्शन किये, वहाँ सिर झुकाया। बाद में भोजन दिया तो पूँछ हिलाते हुए खाने लगा।

संत बीज पलटे नहीं चाहे युग बीते अनंत।
ऊँच नीच घर अवतरे रहे संत का संत ॥

कुत्ते का मंगलवार !

मरते समय किसी कारण से मति हलकी होने से जीव हलकी योनि में जन्मता है, परंतु की हुई भक्ति, की हुई सेवा हलकी योनि में भी उसकी रक्षा करती है।

२४ से २६ अक्टूबर ९७ तक उझानी (उ.प्र.) में मेरा सत्संग था। सत्संग-स्थल शहर से कुछ दूर खेत-खलिहान में था। मेरे पास प्रसाद पड़ा था। मैंने शिष्यों से कहा : ''चलो, हम प्रसाद बाँटकर आयें। गरीब बस्ती है। सुबह घूमना भी हो जायेगा और प्रसाद भी बँट जायेगा।''

संतों की नजर में मनुष्य ही उनके प्रसाद का अधिकारी है ऐसी बात नहीं है। उनके प्रसाद का अधिकारी तो हर जीव है। मैंने कुत्तों को भी प्रसाद डाला तो कुत्तों ने भी अच्छी तरह से खाया। उनमें एक कुत्ता ऐसा भी था जो मुझे बड़ा प्यार कर रहा था, मेरे पीछे-पीछे घूम रहा था किंतु मैं प्रसाद देता तो वह खाता नहीं था।

वहाँ के लोगों ने मुझे बताया : ''बाबाजी ! आज मंगलवार है। मंगलवार के दिन यह कुत्ता उपवास रखता है।''

वह कुत्ता पिछले जन्म में मनुष्य होगा और मंगलवार का उपवास करने का उसको आग्रह होगा। उसीके फलस्वरूप कुत्ते की योनि में होते हुए भी उसे कैसे प्रेरणा मिलती होगी कि आज मंगलवार है !

ऐसे ही गोरखपुर (उ.प्र.) में भी मैंने एक कुत्ते के बारे में सुना था। वह कुत्ता एकादशी के दिन नहीं खाता था। बहुत आग्रह करके उसे रोटी दो तो उठाकर ले जाता और जमीन में गाड़ देता, फिर द्वादशी के दिन निकालकर खाता !

अयोध्या के बिंदु ब्रह्मचारी के पास एक ऊँट था। वे ऊँट के गले में ऊन की बड़ी माला डाल देते थे। ज्यों ही वे माला डालते वह ऊँट रामनाम से मिलती ध्वनि गुनगुनाता जाता, गला हिलाता जाता और माला घूमती जाती !

✻

जिन दिल बाँधा एक से...

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

मनुष्य नश्वर वस्तुओं और व्यक्तियों से जितना प्रेम करता है एवं उनके लिए जितना चिंतन करता है, उससे आधा भी अगर अमिट और शाश्वत आत्मा का करे तो उसका तो कल्याण होगा ही, उसके कुल का भी कल्याण हो जायेगा।

कबीरजी ने कहा है :

जितना हेत हराम से, उतना हरि से होय।
कह कबीर ता दास का, पला न पकड़े कोय॥

महत्त्वबुद्धि है संसार में और भजन भगवान का करते हो तो भक्ति में बरकत नहीं आयेगी। भगवत्प्राप्ति में महत्त्वबुद्धि हो जाय और चिंतन भी सदैव भगवान का हो जाय, केवल व्यवहार चलाने के निमित्त संसार की चीजों का उपयोग किया जाय तो भक्त को विघ्न-बाधाएँ अवरोधरूप नहीं बन सकतीं।

ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ता है। जो भरोसा परमात्मा पर करना चाहिए वह अगर किसी मरने-मिटनेवाले पुत्र-परिवार पर करते हो या पद पर करते हो तो आखिर में परेशानी होगी ही। वहाँ से आपको कभी-न-कभी धोखा या धक्का मिलेगा ही, यह बिल्कुल पक्की बात समझो। जो प्रेम प्रभु को करना चाहिए वह अगर पति या पत्नी के हाड़-मांस के शरीर को करते हो तो कभी-न-कभी दोनों के बीच झगड़ा होगा ही यह बिल्कुल सच्ची बात समझो।

कबीरजी ने कहा है :

कबिरा इह जग आय के, बहुत से कीन्हें मीत।
जिन दिल बाँधा एक से, वे सोये निश्चिंत॥

जिस पुत्र के लिए तुम रात-रात भर जगे थे, रोये थे वही पुत्र तुम्हारी मृत्यु के समय तुम्हें पानी का प्याला भी पिलाये या न पिलाये, कोई पता नहीं...

ऐ गाफिल ! न समझा था, मिला था तन रतन तुझको।
मिलाया खाक में तूने, ऐ सजन ! क्या कहूँ तुझको ?
अपनी वजूदी हस्ती में तू इतना भूल मस्ताना...
अपनी अहंता की मस्ती में तू इतना भूल मस्ताना...
करना था किया वो न, लगी उल्टी लगन तुझको॥
जिन्होंके प्यार में हरदम मुस्तके दीवाना था...
जिन्होंके संग और साथ में भैया !
तू सदा विमोहित था...
आखिर वे ही जलाते हैं करेंगे या दफन तुझको॥
शाही और गदाही क्या ? कफन किस्मत में आखिर।
मिले या ना खबर पुख्ता ऐ कफन और वतन तुझको॥

यह शरीर कब और कहाँ मर जाय, कोई पता नहीं। ऐसे क्षणभंगुर शरीर को सँभालने में, सजाने में, मान दिलाने में, इसके नश्वर सम्बन्धों को सच्चा मानने में सारी जिंदगी क्यों गँवा रहे हो, भैया ?

कई वर्ष पहले की बात है। एक सेठजी बीमार पड़े थे। उनके घर का कोई सदस्य आया और मुझसे बोला :

''बाबाजी ! सेठजी की स्थिति बहुत गंभीर है। वैसे तो वे दर्शन करने आ जाते लेकिन उनमें चलने की भी ताकत नहीं है। बाबाजी कृपा करके घर आ जायें और उन पर एक दृष्टि डाल दें तो बहुत कुछ फर्क पड़ सकता है।''

उसने काफी प्रार्थना की। प्रार्थना में श्रद्धाभाव भी था। हमने कहा : ''सत्संग से लौटते वक्त आ जायेंगे।''

सत्संग करके हम उसके घर गये और पूछा : ''कहाँ हैं सेठजी ?''

घरवालों ने बताया : ''बाबाजी ! वे तो हमें छोड़कर चले गये।''

अभी-अभी तो सत्संग में चलकर आने की ताकत नहीं थी और एकाएक इतनी शक्ति आ गयी कि जहाँ से चल बसे ?

नानकजी की वाणी को याद रखें :

संगी साथी चल गये सारे, कोई न निभियो साथ।
कह नानक इह विपत में, टेक एक रघुनाथ॥

एक आदमी अपने मित्र से मिला और उसे विश्वास दिलाकर आया कि 'तुम फिक्र मत करना, मैं बैठा हूँ। तुम्हारा धंधा मैं इस तरह बंद नहीं होने दूँगा।' उसके आधे घंटे बाद टेलिफोन आया कि वह आदमी मर गया, क्योंकि उसे अचानक दिल का दौरा पड़ गया। अभी-अभी तो वह अपने मित्र को छाती ठोक-ठोककर कह रहा था कि 'तुम चिंता मत करो, मैं बैठा हूँ न, सब सँभाल लूँगा...' और अभी-अभी वह खुद ही चल बसा ! खुद को ही सँभाल न पाया !

कर सत्संग अभी से प्यारे ! नहीं तो फिर पछताना है।
खिला-पिलाकर देह बढ़ायी, वह भी अग्नि में जलाना है॥

जो भरोसा अपने अंतर्यामी परमात्मा पर करना चाहिए वह यदि धन पर किया तो जरूर आयकर (इनकम टैक्स), बिक्रीकर (सेल्स टैक्स) की मुसीबतें आयेंगी। आप व्यवहार करो, व्यवहार में थोड़ा-बहुत एक-दूसरे पर, पदार्थों पर भरोसा करो लेकिन पूर्ण भरोसा तो अपने परमात्मा पर ही करो, जो हमारे हृदय की धड़कन चलाता है। जो कुछ कर्म करो उसीको पाने के लिए करो, जीवन का सार इसीमें है। किसी सद्गुरु की शरण जाकर, उनसे ब्रह्मज्ञान का सत्संग सुनकर, उनकी सेवा करके, अंतःकरण शुद्ध करके ब्रह्मज्ञान पचाते जाओ... नहीं तो फिर पछताओगे... इस अमूल्य मनुष्य-जीवन से यों ही हाथ धो बैठोगे...

अंतर्यामी देव को छोड़कर जो बाहर के देव को पूजता फिरता है वह तो 'कर्मलेढ़ी' कहा जाता है। जैसे, हाथ में मक्खन का पिण्ड आये उसको गिराकर छाछ चाटने लग जाय, ऐसे ही अंतरतम चैतन्य आत्मदेव का रस, सुख और आनन्द छोड़कर बाहर किसी वस्तु या व्यक्ति को रिझाने में लग जाय उसको क्या कहेंगे ?
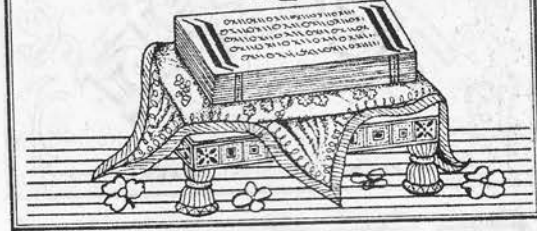
एक क्षण में साक्षात्कार !

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

(१४ अगस्त २००२ को पूज्यश्री अपने एकांतवास के दौरान अमदावाद में विराजमान थे। साबरमती नदी के पावन तट पर शांत-सौम्य वातावरण में स्थित आश्रम में 'श्री योगवाशिष्ठ महारामायण' का पठन हो रहा था।)

वशिष्ठजी बोले : 'हे रामजी ! अर्थयुक्त वचनों के बिना दृश्यभ्रम निवृत्त नहीं होता। हे रामजी ! तुम वेदधर्म की प्रवृत्तिसहित सकाम यज्ञ-याग आदि त्रिगुण से रहित होकर स्थित हो और सत्संग तथा सत्शास्त्र परायण हो तब मैं एक ही क्षण में तुम्हारा दृश्यरूपी मैल दूर कर दूँगा।'

(इन वचनों को सुनते ही पूज्यश्री के श्रीमुख से सहसा निकल पड़ा :)

ओहो ! क्या बहादुरों-के-बहादुर हैं ! कैसे हैं भगवान श्रीराम के गुरु ! वशिष्ठजी भगवान की जय ! भगवान के गुरुदेव की जय !

कोई कहता है कि 'अरे, हमारे गुरु तो भगवान हैं। महाराज ! हमने आपको भगवान कह दिया।'

क्या बहादुरी कर दी ? भगवान के भी गुरु होते हैं। भगवान श्रीराम भी वशिष्ठजी महाराज के आगे चेले बन जाते हैं।

क्यों भगवान होने का दावा करना ? फिर लोग बोलेंगे : 'बरसात कर दो... मृतक को जिंदा कर दो...' भगवान मत बनो, आप ईश्वर में रहो, ठीक है ? कर्ता बनकर कर्म करोगे तो फँसोगे, सीधा गणित है। आप तो बस, ईश्वर में रहो। फिर

तो मौज-ही-मौज है।

वशिष्ठजी महाराज कहते हैं कि सकाम भावना से ऊपर उठो तो एक ही क्षण में मैं दृश्यरूपी मैल दूर कर दूँगा अर्थात् साक्षात्कार करा दूँगा।

जैसे लाइट फिटिंग हो गयी हो तो बटन दबाने पर एक ही क्षण में अँधेरा भाग जाता है। बटन दबाने में देर ही कितनी लगती है ? उतनी ही देर **आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस** (इसी दिन पूज्यश्री को आत्मसाक्षात्कार हुआ था।) को लगी थी। दृश्य की सत्यता दूर हो गयी। गुरुजी को तो इतनी-सी देर लगी और अपना ऐसा काम बना कि अभी तक बना-बनाया है। इस काम को मौत का बाप भी नहीं बिगाड़ सकता।

'हे रामजी ! जब दृश्य का अभाव होगा तब द्रष्टा भी शांत हो जायेगा और दोनों का अभाव होगा तब पीछे शुद्ध आत्मसत्ता ही शेष रहेगी।'

दृश्य की सत्ता शांत हुई तो फिर द्रष्टा, साक्षी या असंग भाव का चिंतन भी शांत हो जायेगा। एक सत्ता - परब्रह्म शेष रहेगा।

'हे रामजी ! अर्थयुक्त वचनों के बिना दृश्यभ्रम निवृत्त नहीं होता। जो तर्क करके जगत-भ्रम को निवृत्त करना चाहे तो वह मूर्ख है। इससे तो जगत-भ्रम और भी दृढ़ होता है। जहाँ जाओगे वहाँ देश, काल और क्रिया सहित नित्य पंचभौतिक सृष्टि ही दृष्टि आयेगी, और कुछ दृष्टि न आयेगा। यदि कोई जगत से उपराम होकर समाधि लगाकर बैठेगा तो भी चिरकाल में तो उस स्थिति से नीचे उतरेगा। फिर उसे जगत का शब्द और अर्थ भास आयेगा।'

तर्क से विश्रांति नहीं मिलेगी। समाधि से भी उठोगे तब भी जगत भासित होगा और देह भासित होगी। 'कहाँ जाऊँ ? क्या करूँ ?' इस प्रकार कर्ताभाव का चिंतन तो बना रहेगा। कर्ता बना रहा तो बंधन बना रहेगा।

'जैसे - मृगतृष्णा की नदी भासती है जो कर्तव्यता से निवृत्त नहीं होती, केवल ज्ञातव्यता से निवृत्त होती है।'

आप सोचेंगे कि 'मृगतृष्णा की नदी भासती है तो कुछ कर लो जिससे नदी न भासे।' नहीं, केवल उसका मिथ्यात्व जान लो, बस। ऐसे ही अपने शुद्ध-बुद्ध आत्मस्वभाव को जान लो, बस। इसीके अनुकूल शास्त्र पढ़ो, इसी प्रकार का चिंतन करो और इसीकी तड़प रखो तो शीघ्र ही काम बन जाय...

*

बारहवें अध्याय का माहात्म्य

श्रीमहादेवजी कहते हैं : पार्वती ! दक्षिण दिशा में कोल्हापुर नामक एक नगर है, जो सब प्रकार के सुखों का आधार, सिद्ध-महात्माओं का निवासस्थान तथा सिद्धि-प्राप्ति का क्षेत्र है। वह पराशक्ति भगवती लक्ष्मी की प्रधान पीठ है। सम्पूर्ण देवता उसका सेवन करते हैं। वह पुराणप्रसिद्ध तीर्थ भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाला है। वहाँ करोड़ों तीर्थ और शिवलिंग हैं। रुद्रगया भी वहीं है। वह विशाल नगर लोगों में बहुत विख्यात है। एक दिन कोई युवक उस नगर में आया। वह कहीं का राजकुमार था। उसके शरीर का रंग गोरा, नेत्र सुंदर, ग्रीवा शंख के समान, कंधे मोटे, छाती चौड़ी तथा भुजाएँ बड़ी-बड़ी थीं। नगर में प्रवेश करके सब ओर महलों की शोभा निहारता हुआ वह देवेश्वरी महालक्ष्मी के दर्शनार्थ उत्कण्ठित हो मणिकण्ठ तीर्थ में गया और वहाँ स्नान करके उसने पितरों का तर्पण किया। फिर महामाया महालक्ष्मीजी को प्रणाम करके भक्तिपूर्वक स्तवन करना आरम्भ किया।

राजकुमार बोला : जिसके हृदय में असीम दया भरी हुई है, जो समस्त कामनाओं को देती तथा अपने कटाक्षमात्र से सारे जगत की रचना, पालन और संहार करती है, उस जगन्माता महालक्ष्मी की जय हो। जिस शक्ति के सहारे उसीके आदेश के अनुसार परमेष्ठी ब्रह्मा सृष्टि रचते हैं, भगवान अच्युत जगत का पालन करते हैं तथा भगवान रुद्र अखिल विश्व का संहार करते हैं, उस सृष्टि, पालन और संहार की शक्ति से सम्पन्न भगवती पराशक्ति का मैं भजन करता हूँ।

कमले ! योगीजन तुम्हारे चरणकमलों का चिंतन करते हैं। कमलालये ! तुम अपनी स्वाभाविक सत्ता से ही हमारे समस्त इन्द्रियगोचर विषयों को जानती हो। तुम्हीं कल्पनाओं के समूह को तथा उसका संकल्प करनेवाले मन को उत्पन्न करती हो। इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति - ये सब तुम्हारे ही रूप हैं। तुम परासंवित् (परम ज्ञान) रूपिणी हो। तुम्हारा स्वरूप निष्काम, निर्मल, नित्य, निराकार, निरंजन, अंतरहित, आतंकशून्य, आलम्बहीन तथा निरामय है। देवि ! तुम्हारी महिमा का वर्णन करने में कौन समर्थ हो सकता है ? जो षट्चक्रों का भेदन करके अंतःकरण के बारह स्थानों में विहार करती है, अनाहत, ध्वनि, बिन्दु, नाद और कला - ये जिसके स्वरूप हैं, उस माता महालक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूँ।

माता ! तुम अपने मुखरूपी पूर्णचन्द्रमा से प्रकट होनेवाली अमृतराशि को बहाया करती हो। तुम्हीं परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी नामक वाणी हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। देवि ! तुम जगत की रक्षा के लिए अनेक रूप धारण किया करती हो। अम्बिके ! तुम्हीं ब्राह्मी, वैष्णवी तथा माहेश्वरी शक्ति हो। वाराही, महालक्ष्मी, नारसिंही, ऐन्द्री, कौमारी, चण्डिका, जगत को पवित्र करनेवाली लक्ष्मी, जगन्माता सावित्री, चन्द्रकला तथा रोहिणी भी तुम्हीं हो। परमेश्वरी ! तुम भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिए कल्पलता के समान हो। मुझ पर प्रसन्न हो जाओ।

उसके इस प्रकार स्तुति करने पर भगवती महालक्ष्मी अपना साक्षात् स्वरूप धारण करके बोलीं : 'राजकुमार ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। तुम कोई उत्तम वर माँगो।'

राजकुमार बोला : माँ ! मेरे पिता राजा बृहद्रथ अश्वमेध नामक महान यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे थे। वे दैवयोग से रोगग्रस्त होकर स्वर्गगामी हो गये।

इसी बीच में यूप में बँधे हुए मेरे यज्ञसम्बन्धी घोड़े का, जो समूची पृथ्वी की परिक्रमा करके लौटा था, किसीने रात्रि में बंधन काटकर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया। उसकी खोज में मैंने कुछ लोगों को भेजा था, किंतु वे कहीं भी उसका पता न पाकर जब खाली हाथ लौट आये हैं, तब मैं सब ऋत्विजों से आज्ञा लेकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। देवि ! यदि तुम मुझ पर प्रसन्न हो तो मेरे यज्ञ का घोड़ा मुझे मिल जाय, जिससे यज्ञ पूर्ण हो सके। तभी मैं अपने पिताजी का ऋण उतार सकूँगा। शरणागतों पर दया करनेवाली जगज्जननी लक्ष्मी ! जिससे मेरा यज्ञ पूर्ण हो, वह उपाय करो।

भगवती लक्ष्मी ने कहा : राजकुमार ! मेरे मंदिर के दरवाजे पर एक ब्राह्मण रहते हैं, जो लोगों में सिद्धसमाधि के नाम से विख्यात हैं। वे मेरी आज्ञा से तुम्हारा सब काम पूरा कर देंगे।

महालक्ष्मी के इस प्रकार कहने पर राजकुमार उस स्थान पर आये, जहाँ सिद्धसमाधि रहते थे। उनके चरणों में प्रणाम करके राजकुमार चुपचाप हाथ जोड़कर खड़े हो गये। तब ब्राह्मण ने कहा : 'तुम्हें माताजी ने यहाँ भेजा है। अच्छा, देखो। अब मैं तुम्हारा सारा अभीष्ट कार्य सिद्ध करता हूँ।' यों कहकर मंत्रवेत्ता ब्राह्मण ने सब देवताओं को वहीं खींचा। राजकुमार ने देखा, उस समय सब देवता हाथ जोड़े थर-थर काँपते हुए वहाँ उपस्थित हो गये। तब उन श्रेष्ठ ब्राह्मण ने समस्त देवताओं से कहा : 'देवगण ! इस राजकुमार का अश्व, जो यज्ञ के लिए निश्चित हो चुका था, रात में देवराज इन्द्र ने चुराकर अन्यत्र पहुँचा दिया है। उसे शीघ्र ले आओ।'

तब देवताओं ने मुनि के कहने से यज्ञ का घोड़ा लाकर दे दिया। इसके बाद उन्होंने उन्हें जाने की आज्ञा दी। देवताओं को आकर्षित होकर यहाँ आया देख तथा खोये हुए अश्व को पाकर राजकुमार ने मुनि के चरणों में प्रणाम करके कहा : 'महर्षे ! आपका यह सामर्थ्य आश्चर्यजनक है। आप ही ऐसा कार्य कर सकते हैं, दूसरा कोई नहीं। ब्रह्मन् ! मेरी प्रार्थना सुनिये, मेरे पिता राजा बृहद्रथ अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान आरम्भ करके दैवयोग से मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं। अभी तक उनका शरीर तपाये हुए तेल में सुखाकर मैंने रख छोड़ा है। साधुश्रेष्ठ ! आप उन्हें पुनः जीवित कर दीजिये।'

यह सुनकर महामुनि ब्राह्मण ने किंचित् मुस्कराकर कहा : 'चलो, वहाँ यज्ञमण्डप में तुम्हारे पिता मौजूद हैं, चलें।' तब सिद्धसमाधि ने राजकुमार के साथ वहाँ जाकर जल अभिमंत्रित किया और उसे शव के मस्तक पर रखा। उसके रखते ही राजा सचेत होकर उठ बैठे। फिर उन्होंने ब्राह्मण को देखकर पूछा : 'धर्मस्वरूप ! आप कौन हैं ?' तब राजकुमार ने महाराज से पहले का सारा हाल कह सुनाया। राजा ने अपने को पुनः जीवनदान देनेवाले ब्राह्मण को नमस्कार करके पूछा : 'ब्रह्मन् ! किस पुण्य से आपको यह अलौकिक शक्ति प्राप्त हुई है ?' उनके यों कहने पर ब्राह्मण ने मधुर वाणी में कहा : 'राजन् ! मैं प्रतिदिन आलस्यरहित होकर गीता के बारहवें अध्याय का जप करता हूँ। उसीसे मुझे यह शक्ति मिली है, जिससे तुम्हें जीवन प्राप्त हुआ है।'

यह सुनकर ब्राह्मणोंसहित राजा ने [illegible]न ब्रह्मर्षि से गीता के बारहवें अध्याय का अध्य[illegible]न किया। उसके माहात्म्य से उन सबकी सद्गति हो गयी। दूसरे-दूसरे जीव भी उसके पाठ से परम मोक्ष को प्राप्त हो चुके हैं।

('पद्म पुराण' से)

श्रीमद्भगवद्गीता के १२वें अध्याय के कुछ श्लोक

मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥

मुझमें मन को लगा और मुझमें ही बुद्धि को लगा। इसके उपरांत तू मुझमें ही निवास करेगा, इसमें कुछ भी संशय नहीं है। (८)

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय॥

यदि तू मन को मुझमें अचल स्थापन करने के लिए समर्थ नहीं है तो हे अर्जुन ! अभ्यासरूप योग के द्वारा मुझको प्राप्त होने के लिए इच्छा कर । (९)

अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव ।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥

यदि तू उपर्युक्त अभ्यास में भी असमर्थ है तो केवल मेरे लिए कर्म करने के ही परायण हो जा । इस प्रकार मेरे निमित्त कर्मों को करता हुआ भी मेरी प्राप्तिरूप सिद्धि को ही प्राप्त होगा । (१०)

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः ।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥

यदि मेरी प्राप्तिरूप योग के आश्रित होकर उपर्युक्त साधन को करने में भी तू असमर्थ है तो मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करनेवाला होकर सब कर्मों के फल का त्याग कर । (११)

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥

मर्म को न जानकर किये हुए अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है । ज्ञान से मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान श्रेष्ठ है और ध्यान से भी सब कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शांति होती है । (१२)

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥

जो पुरुष सब भूतों में द्वेषभाव से रहित, स्वार्थरहित, सबका प्रेमी और हेतुरहित दयालु है तथा ममता से रहित, अहंकार से रहित, सुख-दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान है अर्थात् अपराध करनेवाले को भी अभय देनेवाला है तथा जो योगी निरंतर संतुष्ट है, मन-इन्द्रियोंसहित शरीर को वश में किये हुए है और मुझमें दृढ निश्चयवाला है - वह मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है । (१३, १४)

*

भक्त सालबेग

*** संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ***

जैसे स्नातक की पदवी पाने के लिए १५ साल का समय निर्धारित है, वैसे भगवत्प्राप्ति के लिए समय निर्धारित करने की जरूरत नहीं है । तुम जितनी तत्परता से लग जाते हो, जितना आत्मज्ञानी महापुरुष की बात को स्वीकार करके उसी समय व्यवहार में लाते हो, उतना तुम्हारे लिए लक्ष्य प्राप्त करना आसान हो जाता है । जैसे - बच्चा जब तक खिलौनों से खेलता रहता है, तब तक माँ उसको मिलने की जल्दबाजी नहीं करती । थोड़ा खिलौने से खेलता है, थोड़ा रोता है तब भी माँ नहीं मिलती लेकिन जब बच्चा खिलौने होते हुए भी केवल माँ के लिए छटपटाता है, रोना बंद नहीं करता तब माँ उसे मिलती है ।

बच्चे की योग्यता से माँ उसको नहीं मिलती, उसकी पुकार से मिलती है । बच्चा गोरा है, सुंदर है, अच्छे कपड़े पहने हुए हैं इसलिए माँ आती है ऐसी बात नहीं है । बच्चा चाहे काला हो, मैला-कुचैला हो, नाक बहती हो... फिर भी माँ को पुकारता है तो वह भागी चली आती है । ऐसे ही ईश्वर यह नहीं देखता कि भक्त कैसा है, बस, मुझे पुकार रहा है न...

कटक (उड़ीसा) की एक घटना है :

उस राज्य का सेनापति लालबेग वहाँ के राजा की कमजोरी का लाभ उठाकर उन्हें धोखे से परास्त करके खुद राजगद्दी पर चढ़ बैठा । वह जितना महत्त्वाकांक्षी था, उतना ही क्रूर भी था । जितना

अहंकारी था, उतना ही कामी-दुराचारी भी था। सारे दुर्गुण समझो, थोक में उसके पास थे।

एक बार वह कहीं से सेना लेकर आ रहा था। वहाँ पास में ही एक विधवा ब्राह्मणी युवती कपड़े धो रही थी। वह बहुत सुंदर थी। लालबेग ने बलपूर्वक उसका अपहरण कर लिया और उसे अपने महल में ले गया।

लालबेग के महल में वह अबला कब तक अपना शील बचा सकती थी ? लालबेग ने डाँट-फटकार, प्रलोभन, धमकी आदि से कैसे भी करके उसे अपनी भोग्या बना लिया। उसके गर्भ से जिस बालक का जन्म हुआ उसका नाम रखा गया - सालबेग।

पिता ने सालबेग को युद्ध का प्रशिक्षण दिया। युद्ध में सालबेग ऐसे लड़ता मानों, रोबोट लड़ रहा हो। एक बार प्रशिक्षण के समय उसके सिर पर तलवार इतनी जोर-से लगी कि वह बुरी तरह घायल होकर मूर्च्छित हो गया। उसका काफी इलाज किया गया किंतु कोई लाभ न हुआ। स्वार्थी पिता लालबेग ने देखा कि अब यह किसी काम का नहीं है तो उसे महल के एक कोने में धकेल दिया और उसकी उपेक्षा कर दी।

जब राजा ही उपेक्षा कर दे तो मंत्री और नौकर कब तक सँभालें ? अब केवल उसकी ब्राह्मणी माँ ही उसकी देखभाल करने लगी। वही उसे पंखा झलती और उसके मुँह में कौर डालती। लेटे-लेटे वह थक जाता तो उसकी पीठ दबा देती।

एक दिन सालबेग ने कहा : ''माँ ! बड़ी पीड़ा हो रही है। अब तो मैं मर जाऊँ तो अच्छा है।''

माँ : ''नहीं बेटा ! तेरी पीड़ा तो मैं दिन-रात देख रही हूँ, किंतु आत्महत्या करना तो कायरता की पराकाष्ठा है।''

सालबेग : ''माँ ! मैं युद्ध करके शत्रुपक्ष को हराता था तो पिता कहते थे : 'शाबाश-शाबाश !' अब जब घायल होकर पड़ा हूँ तो कोई देखता तक नहीं है। माँ ! यह संसार कितना स्वार्थी है !''

माँ : ''इस संसार की यही रीति है।

सुर नर मुनि सब कै यह रीती।
स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती ॥

सारा संसार स्वार्थ से भरा है। इसे मोह-ममतारूपी मगर ने जकड़ा है। केवल भगवान और भगवान को पाये हुए संत ही निःस्वार्थी होते हैं। बाकी तो सारा संसार अपना उल्लू सीधा करने के लिए दूसरों को उल्लू बनाये जा रहा है।

बेटा ! तेरे बाप ने मुझे भी जबरदस्ती अपनी पत्नी बनाया था। मैं जाति से हिन्दू हूँ। तेरे पिता ने बलपूर्वक मेरा अपहरण किया था। मैं लाचार अबला क्या कर सकती थी ?''

माँ की आँखों से अश्रुधाराएँ बह चलीं... बेटा भी माँ की करुण गाथा सुनकर रो पड़ा।

माँ : ''दुःखों से, विघ्नों से जूझते रहना चाहिए किंतु आत्महत्या का विचार कदापि नहीं करना चाहिए। ऐसे हीन विचार आयें तो उन्हें काटकर फेंक देना चाहिए।''

''किंतु माँ ! मेरी पीड़ा तो देख। मैं कैसे जीऊँगा ? मैं तुझे कष्ट देकर भी स्वस्थ नहीं हो रहा हूँ। क्या करूँ ?''

''बेटा ! मेरे भगवान अगर चाहें और तेरी श्रद्धा दृढ़ हो तो १२ महीने नहीं, १२ सप्ताह नहीं, १२ दिन में ही तू ठीक हो सकता है, मेरे लाल !''

''माँ ! क्या मैं सचमुच १२ दिन में ठीक हो सकता हूँ ? माँ ! तू जो कहेगी मैं वही करूँगा।''

कभी-कभी भक्त की श्रद्धा से भगवान उसके हृदय से मंगलमय बुलवा देते हैं।

माँ ने कहा : ''बेटा ! **श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव...** यह नाम-सुमिरन कर और सबको अपनी ओर आकर्षित करनेवाले, प्राणिमात्र का आत्मा होकर बैठे हुए भगवान श्रीकृष्ण का चिंतन कर।''

फिर माँ ने सालबेग को घुँघराले बालोंवाले नटखट श्रीकृष्ण की मधुर लीलाएँ सुनायीं और कहा : ''बेटा ! उन्हीं नटखट नंदकिशोर का ध्यान कर और उनके नाम का जप कर। वे जरूर तेरी रक्षा करेंगे।''

सालबेग ने जप-ध्यान शुरू कर दिया। १० दिन हो गये, किंतु अभी तक घाव में कुछ भी फर्क नहीं पड़ा था। पीड़ा बढ़ती जा रही थी। ११वें दिन की सुबह हुई।

सालबेग : ''माँ ! तेरे कृष्ण ने तो मुझे ठीक नहीं किया।''

माँ : ''बेटा ! श्रद्धा बनाये रख। नाम जपता रह।''

माँ ने बेटे को ढाढ़स बँधाया। सालबेग नाम-जप करता रहा...

१२वें दिन के प्रभात को सालबेग स्वप्न में क्या देखता है ? उसके सामने वे नंदनंदन मंद-मंद मुस्करा रहे हैं और कह रहे हैं : ''जरा-सा घाव मिटाने के लिए तू परेशान हो रहा है ? ले, यह भभूत लगा ले। मैं ८४ लाख जन्मों का घाव मिटा सकता हूँ, तेरा तो यह सिर का जरा-सा घाव है।''

स्वप्न में भभूत मिली, स्वप्न में ही उसने सिर पर मली। घाव भर गया। अर्धनिद्रित अवस्था में वह अपनी टाल पर धीरे-से थपकियाँ मारने लगा। उसकी आँख खुली और वह चिल्लाया : ''माँ ! माँ ! तेरे कन्हैया ने भभूत दी और मेरा घाव भर गया ! देख, माँ ! देख।

माँ ! अब मैं उसी नटखट नंदकिशोर के गुणानुवाद में सारा जीवन लगा दूँगा।''

''बेटा ! कन्हैया ने तेरा नहीं, तेरे शरीर का घाव भरा है। तुझे तो घाव हो ही नहीं सकता, मेरे लाल ! तू तो अमर आत्मा है। भगवान कृष्ण की भक्ति करके अपने कृष्णतत्त्व को प्रकट कर दे, बेटा ! इसीके लिए यह मनुष्य-जीवन मिला है।''

''माँ ! मैंने अपने पिता लालबेग को भी देख लिया और मंत्री आदि को भी... इस जहाँ में सब मतलब के साथी हैं। माँ ! अब तू मुझे आज्ञा दे। मैं अब सदा के लिए छुट्टी माँगता हूँ। मैं संन्यासी होकर अपना जीवन सफल करूँगा। मैं अब पैदल ही जगन्नाथजी की यात्रा करूँगा।''

माँ तो कृष्णभक्त थी ही। उसने हँसते-हँसते कहा : ''मैं तुझे नहीं रोकती, बेटा ! वही जीवन सफल है, जो भगवान के काम आ जाय।''

सालबेग ने माता के चरणस्पर्श किये और चल पड़ा। उसके बाद माँ भी महल में नहीं दिखाई दी।

सालबेग ने भगवान जगन्नाथ की भक्ति करते-करते जो भजन बनाये, वे आज भी जगन्नाथपुरी, कटक और उड़ीसा के कई इलाकों में बड़े प्रसिद्ध हैं।

कहाँ तो एक क्रूर, लड़ाकू पिता का योद्धा बेटा सालबेग... सिर में घाव हो गया, पिता ने उपेक्षा कर दी, जीवन से हताश-निराश होकर आत्महत्या का विचार करने लगा और कहाँ माँ से कृष्णभक्ति के संस्कार मिले तो शरीर का घाव तो मिटाया ही, जन्म-मरण के घाव को मिटाने के रास्ते पर भी चल पड़ा !

मानव के मन में अथाह सामर्थ्य है, जरूरत है तो किसी मार्गदर्शक की, ताकि उस सामर्थ्य के खजाने को खोलने की युक्ति मिल जाय। ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के पास होती हैं वे युक्तियाँ ! अगर कोई जिज्ञासु हो और तत्परतापूर्वक लग पड़े तो शीघ्र ही काम बन जाय...

महत्त्वपूर्ण निवेदन

सदस्यों के डाक-पते में परिवर्तन अगले अंक के बाद के अंक से कार्यान्वित होगा। जो सदस्य १३६वें अंक से अपना पता बदलवाना चाहते हैं, वे कृपया फरवरी २००४ के अंत तक अपना नया पता भेज दें।

सेवाधारियों व सदस्यों के लिए विशेष सूचना

(१) कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नगद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनी ऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

(२) 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता की शुरुआत पत्रिका की उपलब्धता के अनुसार कार्यालय द्वारा निर्धारित की जायेगी।

योग-सामर्थ्य

❊ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ❊

कुछ वर्ष पहले की बात है :

एक साधु योगी की खोज में सीतापुर के अरण्य में गये। वहाँ उन्हें एक योगी मिले। योगी ने उनसे पूछा : ''क्या चाहिए ?''

साधु : ''योग सीखना है।''

''मैं पूरा योग नहीं जानता। पीपलकोटि से पूर्व की ओर जाना। वहाँ से इतना-इतना चलना, मृत्युश्रय पहाड़ आयेगा, उसमें रेंगकर घुसना। रास्ता बड़ा लम्बा है लेकिन वहाँ एक सिद्ध योगी रहते हैं।''

बताये गये पते के अनुसार वह साधु चल पड़ा। रास्ता बड़ा कठिन था, वह बड़ी मुश्किल से वहाँ पहुँचा। गुफा मुश्किल से मिली। फिर जैसे साँप रेंगता है वैसे रेंगकर साधु को अंदर जाना पड़ा। उसने अंदर जाकर देखा तो एक झरना बह रहा था और थोड़ी ही दूरी पर एक विशालकाय योगी विराजमान थे। उनके दाढ़ी-बाल बिल्कुल श्वेत थे। पास में ही एक दूसरे योगी बैठे थे, उनके दाढ़ी-बाल काले थे।

साधु ने उन्हें प्रणाम किया। वे बोल उठे : ''कलियुग का आदमी यहाँ कैसे पहुँच गया ?''

''महाराज ! मुझे योग सीखना था। सीतापुर के अरण्य में एक योगी ने आपका पता बताया। लेकिन अभी मैं बड़ा भूखा-प्यासा हूँ।''

''अच्छा, तुम झरने से जल पी लो और थाल में भोजन पड़ा है। जितना चाहिए उतना खा लो।''

वे साधु लिखते हैं : 'मुझे जो प्रिय था वही चिउड़ा और बूँदी के लड्डू थाल में पड़े थे। मैंने सोचा - मेरे प्रिय पदार्थ यहाँ कैसे आ गये ?'

वे योगी के संकल्प से बने थे। जैसे भारद्वाज ऋषि ने भरत के लिए, तुकाराम महाराज ने शिवाजी के लिए योगबल से विभिन्न प्रकार के पकवानों की व्यवस्था कर दी थी, वैसे ही इस साधु के लिए भी मनपसंद भोजन की व्यवस्था हो गयी।

जैसे आप स्वप्न में सभी चीजें बना लेते हैं, वैसे ही योगशक्ति और एकाग्रता का उपयोग करके जाग्रत में भी चीजें बन सकती हैं।

साधु आगे लिखते हैं : 'मुझे कहा गया कि जितना चाहिए उतना खाना। जूठन मत रखना।'

मेरा मनपसंद भोजन था, भूख भी जोरों की लगी थी। अतः मैंने ठीक-ठीक लड्डू और चिउड़ा ले लिया। ले तो लिया किंतु मैं उतना खा न सका। थोड़ा-सा खाया, फिर सोचा कि जूठा बचेगा तो महाराज टोकेंगे। अतः बचे हुए लड्डू और चिउड़ा मैंने उसी झरने में धीरे-से डाल दिया। फिर मैं हाथ-मुँह धोकर योगी के पास आ गया।

महाराज ने पूछा : ''खाया ?''

''हाँ।''

''जूठा कहीं डाला तो नहीं ?''

''नहीं, महाराज!''

''तू योग सीखने आया है ?''

''जी, महाराज!''

''आँखें बंद कर।''

मैंने आँखें बंद कीं। एक ही पल के बाद आँखें खोलीं तो देखा कि मैं हृषिकेश में पड़ा हूँ ! छः महीने तक पैदल चलकर पीपलकोटि से वहाँ पहुँचा था और एक ही क्षण में हृषिकेश पहुँच गया !'

कैसा है योग-सामर्थ्य ! क्षण भर में ही मीलों का सफर तय हो गया !

दूसरी एक महत्त्वपूर्ण बात यहाँ स्पष्ट होती है कि योग के साधक को संयमी और सत्यवक्ता होना चाहिए। अन्यथा किया गया कठोर परिश्रम-तप भी तुच्छ, नश्वर फल देकर नष्ट हो जाता है और साधक वहीं पहुँच जाता है जहाँ से वह लक्ष्यप्राप्ति के लिए चल पड़ा था।

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

धूनी में गोलियाँ !

सौराष्ट्र के जूनागढ़ में सीताराम बापू नामक प्रसिद्ध संत हो गये । केशोद के पास जंगल में उनकी झोंपड़ी थी । जूनागढ़ का नवाब मोहब्बत खान शिकार का बड़ा शौकीन था । उसको पता नहीं था कि हिंसा से मोहब्बत करने से तबाही हो सकती है ।

संत सीताराम बापू अहिंसा का प्रचार करते थे । उनके पास कोई आता तो कहते : 'बेटा ! अपने द्वारा किसीकी ठगी न हो, किसीके प्राण न जायें इसका ख्याल रखना ।'

नवाब मोहब्बत खान अपने रसाले (सैन्य-टुकड़ी) के साथ गिर (गिरनार का जंगल) में शिकार खेलने के लिए गया । रसाला बड़ा था । वह रात को तंबुओं में रहता, दिन में हिरणों और जंगली जानवरों के पीछे भटकता । सौभाग्य से वह बाबा के इलाके में पहुँच गया । इतने में उसे हिरणों का टोला दिखा । धड़... धड़... धड़... गोलियाँ छूटीं । लेकिन एक भी हिरण घायल नहीं हुआ !

मोहब्बत खान की आँखें विश्वास नहीं कर पा रही थीं कि एक भी हिरण घायल नहीं हुआ ! एक भी हिरण गिरा नहीं ! सारी गोलियाँ कहाँ गयीं ? वे सब खोजते-खोजते आगे गये तो संत सीताराम बापू की कुटिया दिखी । सौम्य वातावरण छाया था । नवाब ने कहा : ''बाबा ! हिरणों का टोला था, हमने गोलियाँ छोड़ीं किंतु एक भी हिरण नहीं मरा ।''

''तुझे पता है कि यह क्षेत्र जीवों पर दया करने का है । निर्दोष हिरणों को मारनेवाले नहीं जानते कि पाप का कितना भारी बोझ उनके सिर पर आता है । उनको बचाने के लिए मैंने उनकी गोलियाँ यहाँ मँगवा ली हैं ।''

ऐसा कहकर बाबा ने अपनी धूनी में से चिमटे के द्वारा एक-एक करके सभी गोलियाँ निकालकर नवाब के सामने रख दीं । नवाब बाबा के चरणों में गिर पड़ा और बोला : ''आज से मैं और मेरे साथी शिकार नहीं करेंगे, बाबा ! अब सिर्फ आपकी दुआ चाहिए ।''

कैसे हैं भारत के संत ! किसी और मजहब में ऐसे संत होते तो न जाने उनकी कितनी प्रसिद्धि होती और भगवान की नाईं कितने पूजे जाते ! कितने मंदिर होते उन महापुरुष के ! यहाँ तो ऐसे कई महापुरुष होते रहते हैं... कितनी भाग्यवान है भारतभूमि !

आज के आदमी की बुद्धि इतनी छोटी हो गयी है कि यह विश्वास करने की काबिलियत भी गँवा बैठी है कि देवलोक, पितृलोक, असुरलोक आदि का अस्तित्व है, प्रेतों की दुनिया भी है... भले सब तुम्हारी इन स्थूल आँखों से नहीं दिखता । वैसे तो टी.वी. और रेडियो की तरंगें भी वातावरण में विद्यमान हैं किंतु इन आँखों से नहीं दिखतीं । उनके चैनल या स्टेशन मिलाने पड़ते हैं, तभी तरंगों के अस्तित्व की खबर मिलती है । ऐसे ही सूक्ष्म जगत के इन लोकों को देखना हो तो उनकी विधि से यात्रा करनी पड़ती है ।

बाबा ने नवाब की चलायी गोलियाँ धूनी में से निकालकर दे दीं । श्री रामकृष्ण परमहंस ने जवा के फूल का रंग बदल दिया था । ज्ञानेश्वर महाराज, संत तुकाराम, संत नामदेव, संत कबीर व साँई लीलाशाहजी बापू के भक्तों को उन महापुरुषों की वास्तविक पहुँच का यत्किंचित् एहसास होता है । बाकी छोटी मतिवाले तो आश्चर्य करके भूल जायेंगे । आपके आत्मदेव में अद्‌भुत सामर्थ्य छुपा है ।

महाभारत (शांतिपर्व) में लिखा है -

न मनुष्यात् श्रेष्ठतरो हि किंचित् ।

हे मानव ! अपनी श्रेष्ठता को जगा, भैया !

इच्छा-वासना को नियंत्रित कर अपनी महानता को देख। अपनी दिव्यता को पूरा नहीं जगा पाये तो कोई अंश ही जगा ले।

सामवेदीय 'संन्यासोपनिषद' के दूसरे अध्याय में लिखा है :

यस्तु द्वादशसाहस्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम्।
तस्य द्वादशभिर्मासैः परं ब्रह्म प्रकाशते ॥

जो मनुष्य प्रणव (ॐ) का प्रतिदिन १२ हजार जप करता है, उसे १२ माह में ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

दृढ़ श्रद्धा, आदर और अर्थ सहित, मन लगाकर विधिवत् जप करनेवाले को अवश्य साक्षात्कार होता है। कोई व्यग्रचित्त होकर, हीन कर्म करता हुआ, परीक्षा करने के लिए थोड़े दिन जप करे और साक्षात्कार न हो तो इसमें उपनिषद की सत्यता और शास्त्र के वचनों पर शंका करना मूर्खता है।

आम की गुठली से आम का फल लगता है। अगर बंदर गुठली लगाकर उसे बार-बार खोद-खोदकर देखते रहें तो न पेड़ प्राप्त करेंगे न ही आम और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास कर देंगे कि 'आम की गुठली से पेड़ नहीं उगता, आम का फल नहीं लगता।'

तो क्या आपका मन भी उनका अनुकरण करेगा ? कभी नहीं, भैया ! आप डट जाइये - ४० दिन अथवा ७-७ दिन या २१ दिवसीय अनुष्ठान में। *

काजी से बने संत गरीबदास

मुसलमानों में भी कई सज्जन आत्माएँ होती हैं। एक सज्जन स्वभाववाले अजमेर के काजी ने सुना कि दादू दीनदयाल महाराज का सत्संग आमेर के किल्लाराम बाग में हो रहा है।

उस जमाने में काजी लोग ही राजा की तरफ से न्याय देते थे। आज बड़े-बड़े न्यायाधीशों को जो मान मिलता है, उससे भी ज्यादा सम्मान उस समय के काजियों को मिलता था। ऐसे सम्मान के धनी उन काजी ने सुना कि दादू दीनदयाल महाराज पधारनेवाले हैं तो वे सत्संग सुनने के लिए गये।

'सृष्टि खुदा ने पैदा की। शैतान और खुदा अनादि काल से आये हैं।' तो खुदा की बराबरी करने की ताकत शैतान में कहाँ से आयी ? खुदा इतना कमजोर है क्या कि शैतान अभी तक उसके साथ खेल रहा है ? इस प्रकार की उस विषय में काजी को कुछ शंकाएँ थीं।

दादू दीनदयाल महाराज ने कहा कि 'शैतान कोई व्यक्ति नहीं है, वासनाएँ ही शैतानियत करती हैं और ईश्वर-प्राप्ति में प्रीति ही खुदा की बंदगी है।'

इस प्रकार अपने हर प्रश्न का वैदिक, पौराणिक और संत-अनुभव से सम्पन्न उत्तर पाकर काजी दादू दीनदयालजी के चरणों में मत्था टेकते हुए बोला कि 'मुझे हिन्दू धर्म में दीक्षित करने की कृपा करें। मैंने हमारे कई पीर-फकीरों से ये प्रश्न पूछे किंतु ऐसा तटस्थ उत्तर और शांति मुझे कहीं नहीं मिली। जिस धर्म में व्यक्ति या संप्रदाय का महत्त्व नहीं, व्यक्ति की गहराई में छुपे उस अल्लाह का, ईश्वर का महत्त्व है उस सत्य सनातन धर्म की दीक्षा मुझे देने की कृपा करें।'

काजी ने दादू दीनदयाल महाराज से दीक्षा ले ली। उस समय मुगलों का राज था। तौबा ! तौबा ! फिर भी दादू दीनदयालजी ने काजी को मंत्रदीक्षा दे दी।

यह बात जब मुगल बादशाह ने सुनी तो आमेर के राजा को डाँट भरा पत्र लिखा। आमेर के राजा ने दादू दीनदयालजी को अर्ज किया।

दादू दीनदयालजी ने कहा कि 'जो मेरे शिष्य बन गये हैं, वे काजी अपनी सफाई आप ही दे देंगे। मैंने उन्हें जबरदस्ती करके दीक्षा नहीं दी है, बल्कि उन्होंने अपनी सूझबूझ और समझ से ली है।'

काजी मुगल बादशाह के पास गये। बादशाह ने पूछा : ''तुमने अपने इस्लाम धर्म का त्याग करके काफिरों का धर्म कैसे स्वीकार किया ? तुमको कौन-सा प्रलोभन मिला ?''

काजी : ''प्रलोभन तो कुछ नहीं मिला। यहाँ तो काजी का पद था, आपकी छत्रछाया थी। यहाँ आत्मशांति के लिए मैंने जो-जो सवाल पूछे उनका

उत्तर रटा-रटाया मिला। किंतु विशालता का बोध करानेवाला, अनुभवसम्पन्न और आत्मशांति का एहसास करानेवाला उत्तर जिस धर्म में मिलता है मैंने उसकी शरण ली। लोगों के आगे मैं भले न्यायदाता काजी था, किंतु अल्लाह के आगे, भगवान के आगे तो मैं गरीब हूँ।''

''जाओ, अब उसी धर्म में अपना मुँह काला करो। हम लोग तुम्हें सम्मान नहीं देंगे।''

''तुम न सम्मान दो तो परवाह नहीं है। अब हम गरीबदास होकर ही रहेंगे।''

वे ही काजी गरीबदास के रूप में प्रसिद्ध हुए और आज भी दादू दीनदयालजी की परंपरा में गरीबदासजी की गद्दी चल रही है। बादशाह का वह डाँट भरा पत्र जयपुर के 'अबीले लेखागार' में आज भी पढ़ने को मिल सकता है।

कैसा महिमावान है सनातन धर्म और उसके संत !

कर्म करने में सावधान !

कर्ता के सिर पर ही कर्म आता है। अच्छा कर्म करते हैं तो वह कर्ता को अच्छा फल देता है। अगर बदमाशी करते हैं तो वह कर्म कर्ता की ही नाक काटता है। हाँ, फल मिलने में देरी हो सकती है किंतु कर्म फल देता ही है। कहा भी गया है : जिसका पाप, उसका बाप।

इसलिए कर्म करने में सावधान रहें। अपने द्वारा ऐसा कोई कर्म न हो कि मानव-जाति के साथ धोखा हो, लोगों की श्रद्धा के साथ धोखा हो। नहीं तो वह कर्म धोखा करनेवाले की ही तबाही कर देगा।

शरीर भी आपकी संस्था है। इसी संस्था से आप और संस्थाएँ सँभाल सकते हैं - घर की, दुकान की... अपने शरीर के साथ भी धोखा न करें। अति श्रम न करें और अति आराम करके आलसी भी न बनें। अति आहार करके इसे अजीर्ण का शिकार न बनायें और अति भुखमरी करके कमजोर भी न करें। 'मैं शरीर हूँ, मैं फलाना हूँ - फलानी हूँ' - इस देहाध्यासरूपी धेनुकासुर को निकाल दें।

अन्तर आलोक — सनातन धर्म का नियम सब पर

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दारिद्रयं मरणं भयम् ॥ *(शिव पुराण)*

माता-पिता, गुरुजन, संतजन आदि जो सम्मान के योग्य हैं उनका जहाँ अपमान होता है और जो अपूज्य (दुर्जन, रंगरूट) हैं, जो आदर के लायक नहीं हैं, जिनकी बात मानने योग्य नहीं है ऐसे मानवता के विरोधी, स्वार्थी, आतंकी का सम्मान होता है, वहाँ भय, शोक और मृत्यु तांडव करते हैं।

माता-पिता और गुरुजनों का अपमान करने से और आतंकवादियों का आदर करने से शोक, भय और मौत जल्दी आती है।

अफगानिस्तान का ही नमूना देख लो (जब अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमला हुआ था तब की बात है)। बुद्ध सम्मान के योग्य थे परंतु वहाँ उनके मंदिर व मूर्तियों का अपमान हुआ और आतंकवादियों का आदर हुआ। अतः भय, शोक और मृत्यु तांडव कर रहा है वहाँ... जग जानता है वहाँ अमेरिका ने बम बरसाये। मृत्यु, भय व शोक का तांडव हुआ। भगवान बम बरसानेवालों को भी सद्बुद्धि दें और आतंकवादियों का कहना मानकर गलती करनेवालों को भी सद्बुद्धि दें। हमको भी भगवान सद्बुद्धि दें कि अपूज्यों की बातों में हम आये नहीं, अपूज्यों, स्वार्थियों एवं आतंकियों से प्रभावित न हों और पूज्यों का अनादर न करें।

शास्त्र के नियम सभीको लागू पड़ते हैं, चाहे हिन्दू हों या मुसलमान। मजहब या समाज के नियम की बात अलग है किंतु सनातन धर्म के नियमों का पालन तो भगवान नारायण को भी करना पड़ता है। नहीं पालते तो फल भुगतने के लिए तैयार होना पड़ता है उन्हें भी !

रामावतार में भगवान श्रीराम ने बालि को बाण मारा। वही बालि कृष्णावतार में शिकारी बनकर श्रीकृष्ण को बाण मारते हैं। उसी निमित्त से भगवान श्रीकृष्ण अपनी लीला समेटते हैं। भीष्म को भी ७३ जन्मों के बाद भी पूर्वकृत् कर्मों ने अपना फल भुगताया। रैदास को भी रघु चमार के यहाँ उत्पन्न होना पड़ा। उन्होंने १०-१२ वर्ष की उम्र में ही इतनी ऊँचाई को पाया कि मेवाड़ की महारानी मीरा उनकी शिष्या बनी।

कृपणता क्या है ?

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

विनश्यति कृपणः ।

'कृपण का विनाश होता है ।'

'बृहदारण्यक उपनिषद' में आता है :

राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ करते हुए गार्गी ने याज्ञवल्क्यजी से पूछा : ''इस पृथ्वी पर सचमुच में कृपण कौन है ?''

याज्ञवल्क्यजी ने कहा : ''जो व्यक्ति आत्मसुख को पाये बिना ही मर जाता है, वह कृपण है ।''

जो सत्य है उसकी परवाह नहीं करते और जो मिथ्या है उसीमें उलझ जाते हैं, वे कृपण हैं । जिससे बुद्धि सत्ता पाती है उस बुद्धिदाता में जिनकी गति-प्रीति नहीं है तथा जिस देह को एक दिन जला देना है, जो देह पहले नहीं थी और बाद में नहीं रहेगी उसके नाम और यश का आकर्षण जो छोड़ नहीं सकते और सत्यस्वरूप में गोता मारने का समय निकाल नहीं सकते, वे कृपण हैं । ऐसे कृपण इस संसार से हारकर चले जाते हैं, फिर चाहे कोई चक्रवर्ती राजा ही क्यों न हो, चाहे कोई जपी-तपी क्यों न हो...

जिसको आप एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ सकते, जिसके बिना आपके शरीर का कुछ अस्तित्व नहीं है, जिसके बिना आपकी आँखें देख नहीं सकतीं, आपकी जीभ चख नहीं सकती, आपके कान सुन नहीं सकते, आपका मन संकल्प नहीं कर सकता, आपकी बुद्धि निर्णय नहीं कर सकती उस परमेश्वर को जाने बिना जो तुच्छ चीजों और तुच्छ मान्यताओं को सँभाल-सँभालकर मर जाता है, वह कृपण है ।

आप संसार से कृपण होकर न जाइये, उदारात्मा होकर जाइये । जो छूटनेवाला है उसे अभी से छोड़ना सीखिये । आपका शरीर छूटनेवाला है । जब बच्चे की छठी मनाते हैं तो ज्योतिषियों से पूछते हैं कि 'यह माँ-बाप की सेवा करेगा कि नहीं करेगा ? पढ़ेगा कि नहीं पढ़ेगा ? स्वदेश में रहेगा कि विदेश जायेगा ?' किंतु यह नहीं पूछते कि 'मरेगा कि नहीं मरेगा ?' दूसरी सब बातों का विकल्प है किंतु मरने के विषय में कोई विकल्प नहीं है क्योंकि मरना सुनिश्चित है । जो पैदा हुआ है वह अवश्य मरेगा । जिस शरीर को मरना है उस शरीर के सम्बन्ध कब तक टिकेंगे ? जो मरेगा और जिसके सम्बन्ध टिकेंगे नहीं, उसको अगर दिल-दिमाग में बिठाकर रखा तो यह कृपणता है । जो अपनी मोह-ममता को नहीं छोड़ सकता उसे कृपण कहते हैं । वह जन्म-मरण के चक्कर में भटकता है । जो अपनी मोह-ममता को छोड़ सकता है, वासना को छोड़ सकता है वह अपने आत्मा को पहचानकर मुक्तात्मा हो जाता है ।

जो अपनी आदतें नहीं छोड़ सकता, अपनी मान्यताएँ नहीं छोड़ सकता, अपनी विषय-वासना नहीं छोड़ सकता, अपनी परिच्छिन्नता नहीं छोड़ सकता, अपना राग नहीं छोड़ सकता वही कृपण है । इस कृपणता के कारण वह ब्रह्मसुख से वंचित हो जाता है ।

कृपण आत्मधन नहीं पाता । ईश्वर की सृष्टि में भरण-पोषण की व्यवस्था तो सुंदर है किंतु 'ऐसा ही मिले, ऐसा ही भोगूँ, बार-बार इसे भोगूँ...' ऐसी हलकी आदतें जो नहीं छोड़ सकता, वह कृपण है । जो देखने, सुनने और सूँघने के पदार्थों की आसक्ति रखता है, विषयों को पकड़े रखता है, मोह-माया को पकड़े रखता है, अहंकार को पकड़े रखता है - वह कृपण है ।

दो प्रकार के कृपण होते हैं :-

(१) जो व्यक्ति अनीति से, अधर्म से - कैसे

भी करके धन का संग्रह करता है और उचित जगह पर उसे खर्च नहीं करता उसको लौकिक रूप से, सामाजिक रूप से कृपण बोलते हैं।

(२) तात्त्विक या आध्यात्मिक रूप से कृपण उसे बोलते हैं जो विषय-विकारों को न छोड़ सके, भय, चिंता और शोक को न छोड़ सके। सबको पकड़कर बैठता है कृपण।

जो कृपण है उसे कृपाण (तलवार या कटार) लगता है। वह ब्रह्मसुख से गिर जाता है, सच्चे सुख से गिर जाता है, सच्ची समझ से गिर जाता है और कृपण होकर ही मर जाता है।

जो आत्मसुख नहीं लेते, जिनकी नजर आत्म-सामर्थ्य की तरफ नहीं है और तुच्छ 'मेरे-तेरे' की बातों में उलझे हुए हैं, 'मैं कौन हूँ ?' यह जानते नहीं हैं, देह को 'मैं' मानते हैं और वस्तुओं को मेरा मानकर उन्हींसे सुखी होने की बेवकूफी पकड़े रखते हैं, वे कृपण हैं। वे अपना ईश्वर से मिलने का भाग्य नहीं खोलते। गुरु की वाणी सुनते हुए भी उस पर विचार नहीं करते, उसके अनुसार चलते नहीं। ऐसे कृपण भगवत्सुख और गुरुकृपा, दोनों से वंचित रह जाते हैं।

अपना आत्मा देश-काल से परे है। देश माने 'हम इस जगह के हैं।' वास्तव में हम नहीं, शरीर इस जगह का है। काल माने 'हम इतने वर्ष के हैं।' वास्तव में हम नहीं, शरीर इतने वर्ष का है। देश और काल शरीर को 'मैं' मानने की कृपणता से सच्चे लगते हैं। आत्मा को 'मैं' रूप में जानने पर देश और काल स्वप्नवत् हैं। सच पूछो तो जो हम हैं उसका पता चल जाय तो देवता लोग भी हमारे दर्शन करके अपना भाग्य बना लें, हम वह आत्मा हैं।

जो परिस्थितियों की लोलुपता नहीं छोड़ता, वह भी कृपण है। जो सुखी होने के लिए दूसरों के पास जाता है, वह पामर है। जो दूसरों को अपने पास बुलाकर सुखी होना चाहता है, गपशप लगाकर सुखी होना चाहता है वह पराधीन है। जो सुख की सामग्री का उपभोग करके सुखी होना चाहता है, वह विषयी है। जो पामर, पराधीन और विषयी हैं, वे कृपण हुए बिना नहीं रहेंगे। अतः न पामर बनो, न पराधीन बनो और न ही विषयी बनो अपितु 'स्व' में बैठो। परहित के लिए किसीसे मिलना पड़े तो ठीक है किंतु अपने सुख के लिए नहीं मिलना चाहिए।

एकांत में किसी वस्तु-व्यक्ति के बिना भी सुखी रह सके और भीड़ में भी सुखी रह सके, प्रवृत्ति में भी सुखी रह सके और निवृत्ति में भी सुखी रह सके वह धीर है। कुछ लोग प्रवृत्ति से घबराते हैं तो कुछ निवृत्ति से। कुछ लोग विषय छोड़ने से घबराते हैं - ऐसे तो करोड़ों लोग हैं। एकतरफा चलनेवाले पामर, विषयी बहुत मिलेंगे और ऐसे ही थोड़े-बहुत निवृत्तिपरायण जपी-तपी भी मिल जायेंगे किंतु निवृत्ति में, प्रवृत्ति में और फिर अपने-आपमें तृप्त रहनेवाले धीर महापुरुष दुर्लभ होते हैं। उनकी यह स्थिति बहुत ऊँची स्थिति है।

आप तो बस, चार काम करो :

(१) कृपणता छोड़ने का इरादा पक्का करो कि 'हम जगत की छोटी-छोटी बातों को सच्चा मानकर कृपण नहीं बनेंगे। बीती हुई बातों को अथवा जो दिखता है उसको सच्चा मानकर कृपण नहीं बनेंगे।'

(२) कृपण होने से बचने के लिए उदार बनना होगा। उदार बनने के लिए क्या करना पड़ेगा ? भगवान और गुरु कहते हैं : 'अपना मन और बुद्धि मुझे दे दो।'

(३) जगत असार, तुच्छ, अनित्य और स्वप्न जैसा है, यह जान लो।

(४) 'अपना आत्मा आनंदस्वरूप है। उसीको पायेंगे, उसीके आनंद में रहेंगे और दूसरों को भी लायेंगे।' - ऐसा दृढ़ संकल्प कर लो।

आज का संदेश है कि अपनी कृपणता छोड़ दो। ज्यों-ज्यों कृपणता छूटती जायेगी त्यों-त्यों औदार्य-सुख मिलता जायेगा और ज्यों-ज्यों औदार्य-सुख में स्थिति होगी त्यों-त्यों कृपणता छूटती जायेगी। मनुष्य-जन्म इसीलिए मिला है कि कृपणता छोड़कर अपने अस्तित्व को पहचान लें।

रूपनगढ़ की राजकुमारी

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

रूपनगढ़ के राजा विक्रमसिंह की बेटी का नाम था - चंचला। एक दिन चित्र बेचनेवाली एक मुसलमान महिला राजमहल में चित्र लेकर आयी और सबको दिखाने लगी। उसके द्वारा दिखाये गये चित्रों में शाहजहाँ, अकबर, महाराणा प्रताप आदि के चित्र थे। आखिर में जब उसने औरंगजेब का चित्र दिखाया तो चंचला अपनी सखियों के साथ हँसने लगी। हँसी-हँसी में चित्र जमीन पर गिरकर टूट गया।

मुसलमान महिला ने कहा : ''शहंशाह के चित्र का इतना अपमान किया गया है, यह अच्छा नहीं हुआ। बादशाह औरंगजेब को इसका पता चलेगा तो रूपनगढ़ की एक ईंट भी नहीं बचेगी।''

राजकुमारी यह सुनकर भड़क उठी और बोली : ''जो मंदिर तुड़वाता है, हिन्दुओं पर जुल्म करता है उसको तो जूते मारने चाहिए।'' फिर चित्र का दाम देकर उसने अपनी सहेलियों से कहा : ''सब बारी-बारी से इस चित्र पर एक-एक लात मारो।''

सहेलियों ने आदेश का पालन किया। उस मुसलमान महिला ने यह बात बेगमों के मारफत औरंगजेब तक पहुँचा दी।

उसे सुनकर औरंगजेब आगबबूला हो उठा। वह तो हिन्दू राजाओं को तहस-नहस करने का बहाना ही ढूँढ़ा करता था। उसने उसी क्षण अपने सेनापति को आदेश दिया : 'सेनापति ! जाओ, उस राजकुमारी चंचला के बाप से कहो कि उसे सजाकर डोली में भेज दे, मैं उसको अपनी औरत बनाऊँगा। अगर ना बोलता है तो रूपनगढ़ को चारों ओर से घेरकर मिट्टी में मिला दो और चंचला को जबरदस्ती डोली में बिठाकर ले आओ।'

पिता ने चंचला से कहा : ''अब तू औरंगजेब के यहाँ चली जा। तू उधर सुखी रहेगी और मेरा राज्य भी बच जायेगा।''

चंचला ने कहा : ''पिताजी ! यह आपने क्या सोचा ? पवित्र राजपूत कुल में जन्म लेकर मैं मुगलानी बनूँगी ?''

''बेटी ! मेरा राज्य छोटा है और औरंगजेब की सेना की तुलना में मेरी सेना भी कम है। अगर मैं विरोध करूँगा तो भी वह तुम्हें बलपूर्वक ले जायेगा। इस व्यर्थ के सर्वनाश से बचने के लिए ही मैं ऐसा कह रहा हूँ।''

चंचला ने सोचा कि 'पिताजी के पास शक्ति नहीं है और मैं उस पापी के पास जाना नहीं चाहती हूँ। केवल मेरे कारण मेरे पिता और प्रजा का बलिदान हो यह ठीक नहीं है। अब क्या करूँ ?'

वह अपने पूजाकक्ष में चली गयी और प्रभु से प्रार्थना करने लगी कि 'तुम राजाओं के राजा हो, स्वामियों के स्वामी हो। औरंगजेब की हस्ती तुम्हारे आगे क्या मायना रखती है ? तुम ही मुझे प्रेरणा दो कि मैं क्या करूँ ?' इस प्रकार प्रार्थना करते-करते वह शांत हो गयी। उसे भीतर से प्रेरणा हुई और उसने अपने पिता से कहा :

''अगर मैं मना करूँगी तो पूरे राज्य का बलिदान देना पड़ेगा, अतः आप औरंगजेब से बोल दो कि सैनिक फलानी तिथि को आकर चंचला को ले जायें।''

औरंगजेब को समाचार दे दिया गया। उसने सोचा कि 'बिना युद्ध के ही आ रही है, ठीक है।' वह उस तिथि की राह देखने लगा।

इधर चंचला ने महाराणा प्रताप के वंशज उदयपुर के राजा राजसिंह को पत्र लिखा कि ''मैंने इस प्रकार औरंगजेब के चित्र का अपमान किया तो उसका बदला लेने के लिए वह मुझे बुला रहा है। महाराणा ! आप राजपूतों के गौरव हैं। आपके

रूपनगढ़ की राजकुमारी

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

रूपनगढ़ के राजा विक्रमसिंह की बेटी का नाम था - चंचला। एक दिन चित्र बेचनेवाली एक मुसलमान महिला राजमहल में चित्र लेकर आयी और सबको दिखाने लगी। उसके द्वारा दिखाये गये चित्रों में शाहजहाँ, अकबर, महाराणा प्रताप आदि के चित्र थे। आखिर में जब उसने औरंगजेब का चित्र दिखाया तो चंचला अपनी सखियों के साथ हँसने लगी। हँसी-हँसी में चित्र जमीन पर गिरकर टूट गया।

मुसलमान महिला ने कहा : ''शहंशाह के चित्र का इतना अपमान किया गया है, यह अच्छा नहीं हुआ। बादशाह औरंगजेब को इसका पता चलेगा तो रूपनगढ़ की एक ईंट भी नहीं बचेगी।''

राजकुमारी यह सुनकर भड़क उठी और बोली : ''जो मंदिर तुड़वाता है, हिन्दुओं पर जुल्म करता है उसको तो जूते मारने चाहिए।'' फिर चित्र का दाम देकर उसने अपनी सहेलियों से कहा : ''सब बारी-बारी से इस चित्र पर एक-एक लात मारो।''

सहेलियों ने आदेश का पालन किया। उस मुसलमान महिला ने यह बात बेगमों के मारफत औरंगजेब तक पहुँचा दी।

उसे सुनकर औरंगजेब आगबबूला हो उठा। वह तो हिन्दू राजाओं को तहस-नहस करने का बहाना ही ढूँढ़ा करता था। उसने उसी क्षण अपने सेनापति को आदेश दिया : 'सेनापति ! जाओ, उस राजकुमारी चंचला के बाप से कहो कि उसे सजाकर डोली में भेज दे, मैं उसको अपनी औरत बनाऊँगा। अगर ना बोलता है तो रूपनगढ़ को चारों ओर से घेरकर मिट्टी में मिला दो और चंचला को जबरदस्ती डोली में बिठाकर ले आओ।'

पिता ने चंचला से कहा : ''अब तू औरंगजेब के यहाँ चली जा। तू उधर सुखी रहेगी और मेरा राज्य भी बच जायेगा।''

चंचला ने कहा : ''पिताजी ! यह आपने क्या सोचा ? पवित्र राजपूत कुल में जन्म लेकर मैं मुगलानी बनूँगी ?''

''बेटी ! मेरा राज्य छोटा है और औरंगजेब की सेना की तुलना में मेरी सेना भी कम है। अगर मैं विरोध करूँगा तो भी वह तुम्हें बलपूर्वक ले जायेगा। इस व्यर्थ के सर्वनाश से बचने के लिए ही मैं ऐसा कह रहा हूँ।''

चंचला ने सोचा कि 'पिताजी के पास शक्ति नहीं है और मैं उस पापी के पास जाना नहीं चाहती हूँ। केवल मेरे कारण मेरे पिता और प्रजा का बलिदान हो यह ठीक नहीं है। अब क्या करूँ ?'

वह अपने पूजाकक्ष में चली गयी और प्रभु से प्रार्थना करने लगी कि 'तुम राजाओं के राजा हो, स्वामियों के स्वामी हो। औरंगजेब की हस्ती तुम्हारे आगे क्या मायना रखती है ? तुम ही मुझे प्रेरणा दो कि मैं क्या करूँ ?' इस प्रकार प्रार्थना करते-करते वह शांत हो गयी। उसे भीतर से प्रेरणा हुई और उसने अपने पिता से कहा :

''अगर मैं मना करूँगी तो पूरे राज्य का बलिदान देना पड़ेगा, अतः आप औरंगजेब से बोल दो कि सैनिक फलानी तिथि को आकर चंचला को ले जायें।''

औरंगजेब को समाचार दे दिया गया। उसने सोचा कि 'बिना युद्ध के ही आ रही है, ठीक है।' वह उस तिथि की राह देखने लगा।

इधर चंचला ने महाराणा प्रताप के वंशज उदयपुर के राजा राजसिंह को पत्र लिखा कि ''मैंने इस प्रकार औरंगजेब के चित्र का अपमान किया तो उसका बदला लेने के लिए वह मुझे बुला रहा है। महाराणा ! आप राजपूतों के गौरव हैं। आपके

पूर्वजों ने धर्मरक्षा के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। विपत्ति में पड़ी एक राजपूत बालिका आपकी शरण में है। धर्म तथा राजपूतों की आन के रक्षक क्या विपत्ति में पड़ी बालिका की रक्षा न करेंगे ? मेरे लिए इससे बड़ी विपत्ति और क्या होगी कि मेवाड़ के अधिपति के जीवित रहते मैं, एक राजपूत कन्या, अनिच्छा से मुगल बादशाह की बेगम बनायी जाऊँगी ?

भुजाओं में शक्ति न हो तो रहने दीजिये। दुराचारी यवनों से रक्षा करने में यदि आप कायर हो जायेंगे तो विष मेरे पास है। मैं अपनी रक्षा आप कर लूँगी।''

एक विश्वस्त घुड़सवार के द्वारा उसने यह पत्र राजसिंह तक पहुँचा दिया।

पत्र पढ़कर राजसिंह ने जवाब भिजवाया : ''राजकुमारी ! प्रताप के इस वंशज में अभी उनका रक्त है। आप निश्चिंत रहें।''

निश्चित तिथि पर औरंगजेब के सैनिक आये। चंचला डोली में बैठी। औरंगजेब के सैनिक चंचला को दिल्ली की ओर ले जा रहे थे। मार्ग में पर्वतीय इलाके में राजसिंह की सेना ने मुगल सेना का डटकर मुकाबला किया। मुगल सेना तितर-बितर होकर भाग गयी।

राजसिंह ने राजकुमारी चंचला से कहा : ''राजकुमारी ! आप चाहें तो हम आपको रूपनगढ़ के राजमहल तक छोड़कर आयें।''

चंचला : ''नहीं, महाराज ! पिताजी तो मुझे मुगल बादशाह को देने जा ही रहे थे। अब पिता के पास जाऊँगी तो औरंगजेब फिर से जुल्म करेगा। आप जैसे वीर के साथ मेरे जीवन का रिश्ता हो - ऐसी मैं प्रार्थना करती हूँ।''

राजसिंह ने कहा : ''मैंने आपकी मदद की इसका मतलब यह नहीं कि मैं आपको अपनी पत्नी ही बनाऊँ। अगर आपकी इच्छा है और आपके पिता की सहमति है तो मेरा द्वार आपके लिए खुला है। आप मेवाड़ की महारानी बन सकती हैं।''

चंचला के पिता सहमत हुए और चंचला मेवाड़ की महारानी बन गयी।

अपने धर्म की रक्षा के लिए कैसी युक्ति खोज निकाली चंचला ने ! एक मुगल की बेगम बनने से बचा लिया अपने-आपको।

जीवन में चाहे कैसी भी विपत्ति आ जाय किंतु जो मनुष्य घबराता नहीं है वरन् शांतिपूर्वक मार्ग ढूँढ़ता है, उसे सही मार्ग वह परमात्मा दिखा ही देता है।

अतः विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य न खोयें वरन् प्रभु से प्रार्थना करें तो वह सबका रक्षक, सर्वसमर्थ परमात्मा आपको सही प्रेरणा देकर विपत्ति से उबार लेगा।

गीता प्रश्नोत्तरी

१२१. आहार कितने प्रकार के होते हैं ?
१२२. किन कर्मों की त्याग-विधि नहीं है ?
१२३. वास्तविक त्यागी कौन है ?
१२४. किस काल में सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है ?
१२५. संयमी पुरुष कब जागता है ?
१२६. दुःखरूप संसार से मुक्त होने का उपाय क्या है ?
१२७. भगवान भूत-प्राणियों की रचना किस आधार पर करते हैं ?
१२८. मृत्युरूप संसार-चक्र में कौन भ्रमण करता है ?
१२९. परमात्मा को कर्म क्यों नहीं बाँधते ?
१30. देवताओं का पूजन करनेवाले किस लोक को प्राप्त होते हैं ?

पिछले अंक के प्रश्नों के उत्तर

१११. दिव्य दृष्टि ११२. भृगु ऋषि ११३. नारदजी ११४. ऊपर की ओर ११५. वेद ११६. भगवान का धाम ११७. चार (भक्ष, भोज्य, लेह्य, चोष्य) ११८. भगवान का ११९. तीन (काम, क्रोध, लोभ) १२०. तीन प्रकार की (सात्त्विक, राजसी, तामसी)

विद्यार्थी-प्रश्नोत्तरी

(इन पवित्र प्रश्नों में से कुछ के प्रश्नकर्ता युधिष्ठिर महाराज हैं और उत्तर देनेवाले धर्मज्ञ भीष्म पितामह हैं। कहीं पर प्रश्नकर्ता उद्धवजी हैं और उत्तर देनेवाले भगवान श्रीकृष्ण हैं। इनका आदर से मनन करना पुण्यात्माओं को ही शोभा देगा।)

प्रश्न : सर्वोत्तम लाभ क्या है ?

उत्तर : आरोग्य।

प्रश्न : सर्वोत्तम सुख क्या है ?

उत्तर : संतोष।

प्रश्न : सदा फल देनेवाला क्या है ?

उत्तर : धर्म।

प्रश्न : धर्म से बढ़कर क्या है ?

उत्तर : उदारता।

प्रश्न : शाश्वत धर्म कौन-सा है ?

उत्तर : वैदिक धर्म।

प्रश्न : जिसके साथ मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती और धोखा नहीं मिलता ऐसा मित्र कौन-सा है ?

उत्तर : सज्जन की मित्रता नित्य नवीन रहती है, कभी जीर्ण नहीं होती। सज्जन की मित्रता दुःख और धोखा नहीं देती और भगवान तथा भगवत्प्राप्त महापुरुषों से बढ़कर सज्जन कौन हैं ? अतः मित्र बनाओ तो उन्हींको।

प्रश्न : किस चीज का त्याग करने से मनुष्य सबका प्यारा होता है ?

उत्तर : अहंकार का त्याग करने से मनुष्य सबका प्यारा होता है। जो अपने से छोटे हैं उनको भी अकड़ू होकर आज्ञा न दो। प्रेम से बोलोगे, अहंकाररहित होकर बोलोगे तो उसको और आपको दोनों को अपनत्व का रस मिलेगा तथा काम में सफलता मिलेगी।

प्रश्न : लज्जा क्या है ?

उत्तर : न करने योग्य कर्म से मुँह मोड़ देना, अयोग्य प्रवृत्ति से सकुचा जाना इसे लज्जा कहते हैं।

प्रश्न : सबसे बड़ी दया क्या है ?

उत्तर : सबके सुख की इच्छा सबसे बड़ी दया है।

प्रश्न : दुर्जय शत्रु कौन-सा है ?

उत्तर : क्रोध।

प्रश्न (उद्धवजी) : सबसे बड़ी शूरवीरता क्या है ?

उत्तर (श्रीकृष्ण) : **स्वभावविजयः शौर्यम्।** स्वभाव पर विजय प्राप्त करना सबसे बड़ी शूरवीरता है।

प्रश्न : ऐसी कौन-सी औषधि है जो सभी दुःखों पर, सभी रोगों पर काम करती है ?

उत्तर : भगवन्नाम। कहा गया है :

राम-नाम की औषधि, खरी नीयत से खाय।
अंग-रोग व्यापै नहीं, महारोग मिट जाय॥

'अंग-रोग होवे नहीं' - ऐसा नहीं लिखा गया। 'अंग-रोग व्यापै नहीं' - रोग अपने में महसूस नहीं होगा, शरीर में महसूस होगा। 'महारोग मिट जाय।' अर्थात् अपना आत्मा इससे पृथक् है यह ज्ञान हो जायेगा।

प्रश्न : ऐसा कौन-सा वैद्य है जो सब रोगों को मिटाने में सहायक है ?

उत्तर : सद्गुरु।

प्रश्न : ऐसी कौन-सी विद्या है जिसे पाकर जीव मुक्त हो जाता है ?

उत्तर : ब्रह्मविद्या। इस विद्या से जीव ब्रह्म हो जाता है।

*
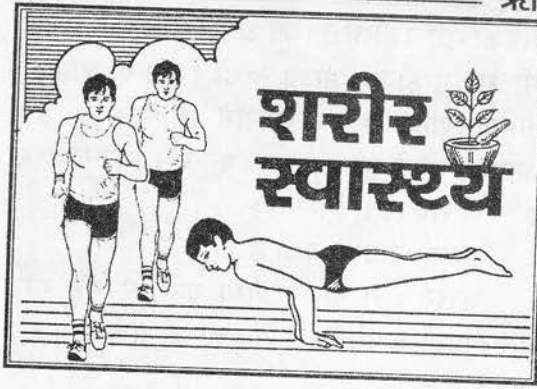
स्वास्थ्यप्रदायक प्रयोग

[गतांक का शेष]

५. स्वास्थ्य व दीर्घायुप्रदायक हरीतकी-प्रयोग : यदि आप लम्बी जिंदगी जीना चाहते हैं तो छोटी हरड़ (हर्रे) रात को पानी में भिगो दें। पानी इतना ही डालें की हरड़ उसे सोख ले। प्रातः उसको देसी घी में तलकर काँच के बर्तन में रख लें। रोज १-१ हरड़ सुबह-शाम खाते रहें। इससे शरीर हृष्ट-पुष्ट होगा।

आयुर्वेद के श्रेष्ठ आचार्य वाग्भट्ट के अनुसार हरड़ चूर्ण घी में भूनकर नियमित रूप से उसका सेवन करने से तथा भोजन में घी का पर्याप्त उपयोग करने से शरीर बलवान होता है व दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

यह प्रयोग बुद्धि, मेधा, स्मृति, नेत्रज्योति व इन्द्रियों का बल बढ़ानेवाला है।

सावधानी : उष्ण प्रकृतिवालों, दुर्बल व्यक्तियों तथा सगर्भा स्त्रियों को हरड़ का सेवन नहीं करना चाहिए।

६. दौर्बल्यनाशक आमलकी रसायन : आँवला परम वृष्य (शुक्र धातुवर्धक) रसायन द्रव्य है। दुर्बल व्यक्ति जहाँ हरड़ नहीं ले सकते, वहाँ आँवले के विविध कल्पों का सेवन करके शक्ति व पुष्टि प्राप्त कर सकते हैं। ताजे आँवले के १० से २० मि.ली. रस में १ चम्मच शहद मिलाकर लेने से शीघ्र ही ताकत आती है, रक्त की वृद्धि होती है। शीघ्र बल प्रदान करने में शहद जैसा दूसरा श्रेष्ठ पदार्थ नहीं है। ताजे आँवले न मिलने पर आँवला चूर्ण में समभाग मिश्री मिलायें। इसका ५ ग्राम चूर्ण १०० मि.ली. पानी में मिलाकर लेने से भी स्फूर्ति आती है। आँवले के नियमित सेवन से शरीर में तेज, ओज, स्फूर्ति और शक्ति बढ़ती है।

ताजे आँवले से बनाया गया च्यवनप्राश १५ से २५ ग्राम की मात्रा में सुबह लेना लाभदायी है।

नियमित आँवले का सेवन करनेवाले व्यक्ति को हृदयरोग अथवा उच्च रक्तचाप की बीमारी नहीं हो सकती। वृद्धावस्था आने पर धमनियों में कठोरता आने लगती है (जिसे आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र में आर्टिरिओ स्क्लेरॉसिस कहते हैं), जिससे रक्तचाप में वृद्धि होने लगती है। आँवला धमनियों को स्वच्छ व मृदु रखता है, जिससे रक्तचाप नियमित रहता है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के जन्मदाता महामना श्री मदनमोहन मालवीयजी का रक्तचाप ८५ वर्ष की आयु तक भी सामान्य ही रहा था। इसका रहस्य पूछने पर श्री मालवीयजी ने बताया कि वे सदा त्रिफला का सेवन करते हैं, जिसमें प्रमुख घटक आँवला है।

७. जीर्ण व्याधिनाशक वर्धमान पिप्पली प्रयोग : पीपर एक सहज उपलब्ध श्रेष्ठ रसायन द्रव्य है। यह अपने तीखेपन से जठराग्नि को बढ़ाता है तथा स्निग्ध व मधुर होने से रस, रक्त व शुक्र - इन धातुओं को पुष्ट करता है।

पहला प्रयोग : १०० मि.ली. दूध व १०० मि.ली. पानी में ३ पीपर डालकर धीमी आँच पर उबालें। जब पानी जल जाय, मात्र दूध शेष रह जाय तब पीपर खाकर ऊपर से दूध पियें। रोज क्रमशः १-१ पीपर बढ़ायें। जब १० पीपर हो जायें तब १-१ पीपर कम करें। यह जीर्ण ज्वर का श्रेष्ठ व चिरस्थायी उपाय है।

पुनः-पुनः आनेवाला ज्वर, जीर्ण कफज्वर, क्षयरोग में आनेवाला ज्वर और जलोदर - इनमें वर्धमान पिप्पली जैसी प्रभावशाली दूसरी कोई दवाई नहीं है।

दूसरा प्रयोग : ३ पीपर को छाछ अथवा गोमूत्र में २४ घंटे तक भिगोकर रखें। बाद में महीन पीस लें। जरा-सा नमक मिलाकर पानी के साथ पी जायें। पीपर बढ़ाने-घटाने का क्रम पहले प्रयोग जैसा ही रखें। इसके सेवन से यकृत व प्लीहा के रोग, अर्श, प्रमेह, मंदाग्नि, संग्रहणी आदि कष्टदायी बीमारियाँ ठीक हो जाती हैं। यह एक अनुभवसिद्ध प्रयोग है।

तीसरा प्रयोग : पहले दिन एक पीपर, घी तथा शहद के विमिश्रण (अर्थात् घी अधिक और शहद कम या शहद अधिक और घी कम) के साथ लें। रोज क्रमशः १-१ पीपर बढ़ाते जायें। जब १० पीपर हो जायें तब १-१ पीपर कम करें। जब तक यह प्रयोग चालू हो तब तक आहार में केवल गाय का दूध, चावल व शहद लें (शहद दूध के साथ न लें)।

आचार्य वाग्भट्ट के अनुसार वर्धमान पिप्पली का यह प्रयोग १ वर्ष तक करने से श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा (क्षय), प्रमेह, अर्श, पाण्डुरोग, प्लीहारोग, विषम ज्वर और शोथ (सूजन) - ये विकार हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

[समाप्त]

*

वसंत ऋतुचर्या

[वसंत ऋतु : १९ फरवरी से १८ अप्रैल तक]

वसंत ऋतु शीत ऋतु व ग्रीष्म ऋतु का संधिकाल है। इस समय शारीरिक बल मध्यम तथा जठराग्नि मंद रहती है। हेमन्त ऋतु में संचित कफ सूर्य की तीव्र रश्मियों द्वारा प्रकुपित होकर जठराग्नि को मंद कर देता है। अतः वसंत में पचने में हलके, रुक्ष, न अति शीत - न अति उष्ण पदार्थों का सेवन करना चाहिए। प्रातः शहद अथवा शहदमिश्रित जल तथा भोजन के बाद द्राक्षासव, पंचकोलासव आदि का सेवन ज्वर, श्वास-कास आदि अनेक कफजन्य रोगों को दूर करनेवाला, भोजन में रुचि और पाचकाग्नि को तेज करनेवाला है। वसंत ऋतु में पचने में भारी, शीत, अम्ल, स्निग्ध और मधुर द्रव्य जैसे - गुड़, दही, टमाटर, पालक, पेठा, ककड़ी, खीरा, खरबूजा, तरबूज, केला, बेर, खजूर, नारियल, कटहल, अंजीर, बेलफल, गन्ने का रस, बादाम, काजू आदि सूखा मेवा, मिठाई, दूध से बने पदार्थों (खीर, मिठाई, आइसक्रीम, मिल्क शेक आदि) का सेवन नहीं करना चाहिए।

पुराने जौ, गेहूँ, मूँग, तिल का तेल, परवल, सूरण, सरगवा, सुआ, मेथी, बैंगन, ताजी नरम मूली और अदरक हितकर हैं। एक साल पुराने चावल अच्छी तरह से धोकर, ऊपर का पानी निकालकर बनाने से पचने में हलके हो जाते हैं तथा कफ को भी नहीं बढ़ाते।

वसंत ऋतु में व्यायाम (चलना, दौड़ना, सूर्यनमस्कार आदि), चंदन और अगर का उबटन, तिल के तेल का नस्य (सुबह नाक में २-२ बूँदें डालें।) कफ-निवारक हैं। वसंत ऋतु में दिन में सोना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत अहितकर है। सुबह ३० से ४० मि.ली. ताजे गोझरण का ८ बार छानकर सेवन अथवा आश्रम में उपलब्ध गोझरण अर्क (१० मि.ली. से ३० मि.ली. तक में आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर) प्रातः खाली पेट लेने से भी कफजन्य अनेक विकारों से रक्षा होती है।

*

** 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के सभी सेवादारों तथा सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद-क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा।*

** नये सदस्यों को सदस्यता के अंतर्गत वर्तमान अंक के अभाव में उसके बदले एक पूर्व प्रकाशित अंक भेजा जायेगा।*

निराधार के आधार हैं बापूजी

(जाने-माने एडवोकेट श्री सुरेश भट्ट १६ जनवरी को नड़ियाद से नंगे पाँव पैदल चले और १८ जनवरी को अमदावाद आश्रम पहुँचे । यहाँ पहुँचकर उन्होंने सद्गुरुदेव का दर्शन-सत्संग प्राप्त किया और भावविभोर होकर सभा के बीच गद्गद कंठ से यह घटना सुनायी :)

४ जनवरी २००४ को घर पर केवल मेरी बेटी पलक और वृद्ध पिताश्री थे । बेटी दसवीं कक्षा में पढ़ती है । उसके द्वारा परीक्षा की तैयारी ठीक से न की जाने के कारण हमने पिछले दिन उसे डाँटा था। पढ़ाई में ध्यान न देने के कारण उसके ट्यूशन के टीचर ने भी उसको डाँटा था कि 'अभी तुम पढ़ाई में ध्यान दो, नहीं तो फेल हो जाओगी ।' इसलिए उसने जहरीली गोली खा ली, जो इतनी खतरनाक होती है कि आधी गोली भी कोई खा ले तो जिंदा नहीं रह सकता। फिर उसको हॉस्पिटल में ले गये । वहाँ के डॉक्टरों ने उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं बतायी। फिर दूसरे हॉस्पिटल में ले गये । वहाँ भी डॉक्टरों ने ना बोला। वहाँ से तीसरे हॉस्पिटल में ले गये वहाँ भी डॉक्टरों ने हाथ खड़े कर दिये। फिर मैंने अपनी जेब से पूज्य बापूजी का फोटो निकाला और उसके सामने प्रार्थना की कि 'गुरुजी ! अगर लड़की को कुछ नहीं होगा तो मैं उत्तरायण पर नंगे पाँव चलकर आपके दर्शन के लिए आऊँगा।' और बेटी को मैं बड़ौदा हॉस्पिटल ले गया। वहाँ के डॉक्टरों ने भी उसे चेक किया और बचाने में अक्षमता दर्शायी।

सभी डाक्टरों ने बोला कि ''अब कितना भी कुछ करो, चाहे पाँच लाख रुपये खर्च करो तो भी यह लड़की बचेगी नहीं।''

मैंने उनसे कहा : ''आप उसका उपचार कीजिये । मेरे गुरुदेव मेरे साथ हैं । मुझको पूरा विश्वास है कि उसको कुछ नहीं होगा।''

फिर डॉक्टरों ने लड़की का उपचार किया और वह बच गयी। डॉक्टर भी आश्चर्यचकित हो गये कि ऐसा केस हमने पहले कभी नहीं देखा। तब मैंने उन्हें बताया कि गुरुकृपा के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

मैं यहाँ गुरुदेव के दर्शन करके सफल मनोरथ और प्रसन्न हूँ और मेरी भोली-भाली पुत्री भी मेरे साथ है, आपके सामने खड़ी है।

– सुरेश भट्ट
जैमिनी पार्क सोसायटी, पटेल बेकरी रोड, नड़ियाद, जि. खेड़ा (गुज.).

*

'ऋषि प्रसाद' एवं 'यौवन सुरक्षा' प्रेरणादायक हैं

हमारे यहाँ कुछ कैदी भाई आपके आश्रम द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'ऋषि प्रसाद' के सदस्य हैं । उनके माध्यम से मैं भी इसे पढ़ लिया करता हूँ।

सचमुच, 'ऋषि प्रसाद' एवं आश्रम की किताबें प्रेरणादायक हैं। उनमें भी 'यौवन सुरक्षा' किताब युवकों के लिए विशेष प्रेरणादायक है।

'ऋषि प्रसाद' से मुझे प्रेरणा मिली और पिछले आठ माह से मैं रोजाना सुबह २ ग्लास जल सेवन कर रहा हूँ। जल-सेवन से मुझमें काफी परिवर्तन आया है। भूख बढ़ रही है, नया उत्साह मिला है। प्रयोग शुरू करने के पश्चात् अब तक कोई बीमारी नहीं आयी।

धन्यवाद के साथ,

– कमानसिंग पदमसिंह गोरखा
येरवड़ा खुला कारागार, येरवड़ा, जि. पूना (महा.).

[*'ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि*]

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी सूरत (गुज.) आश्रम में २५ से २८ दिसम्बर तक 'ध्यान योग शिविर' सम्पन्न हुआ। प्रथम दो दिन विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्र रखा गया, जिसमें गुजरात के अलावा विदेशों एवं अन्य प्रांतों से भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी सम्मिलित हुए। जिन्हें त्रिकाल संध्या, ध्यान, योगासन व बौद्धिक विकास के अनेक यौगिक प्रयोग पूज्यश्री ने कराये।

हजारों विद्यार्थियों के द्वारा एक साथ ओंकार के गुंजन से तुमुल ध्वनि उत्पन्न हुई, जिससे वातावरण में एक प्रकार की आध्यात्मिक चेतना व्याप्त हो गयी। पूज्य बापूजी ने प्रार्थना की महत्ता बताते हुए कहा : **''प्रार्थ्य (इष्ट) की शक्ति को जो खींच ले उसे प्रार्थना कहते हैं। बालकों की प्रार्थना भगवान जल्दी सुनते हैं।''**

बच्चों को लेकर आये पुण्यशाली शिक्षक बंधु व अभिभावक गण योगनिष्ठ पूज्य बापूजी के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में बच्चों को सुसंस्कार-सम्पन्न होते देख गद्गद हो उठे और उनके उज्ज्वल भविष्य व उत्तम चरित्र के प्रति आशवस्त भी हुए।

२७ व २८ दिसम्बर के दिन, विभिन्न प्रांतों से आये विशाल भक्तसमुदाय के आगे आश्रम-प्रांगण पर बना विशाल सत्संग-पंडाल भी नन्हा साबित हो गया। पूज्यश्री ने श्रद्धालुओं को भगवत्प्राप्ति की एक सरल कुंजी व सेवा की महत्ता बताते हुए कहा :

''जो सेवा करो उसे तत्परता से करो। कर्तव्यपालन से रागरहित अवस्था आती है और इस अवस्था से शांति मिलती है। शांति से सामर्थ्य आता है और सामर्थ्य का सदुपयोग करने से जहाँ दुःख, मृत्यु नहीं पहुँच सकते उस ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति में साधक सफल हो जाता है।''

विविध शिविरों में कराये जानेवाले प्रयोगों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए पूज्यश्री ने कहा :

''तुम्हारे न्यूरोन्स (ज्ञानतंतुओं की इकाई) में एवं मन में बहुत शक्ति है। जैसे सेल्युलर फोन छोटा-सा होता है, फिर भी देखो कितना चमत्कारिक काम करता है! इन इलेक्ट्रॉनिक साधनों की खोज किसने की ? तुम्हारे मन ने ही तो की। तुम्हारे मन का एवं ज्ञानतंतुओं का विकास करने की कुंजियाँ 'विद्यार्थी सर्वांगीण उत्थान शिविर' तथा 'ध्यान योग शिविर' में प्रदान की जाती हैं।''

आदिवासी बहुल क्षेत्र **आहवा (जि. डांग, गुज.)** के 'संस्कारी कॉलेज ग्राउण्ड' में १ व २ जनवरी को २ दिवसीय सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। धर्मज्ञ बापूजी ने यहाँ की जनता को सनातन धर्म की गरिमा से अवगत कराया। सनातन धर्म की विभिन्न परंपराओं व रीति-रिवाजों को मानव के सर्वांगीण विकास के लिए दूरद्रष्टा ऋषियों की व्यवस्था बताते हुए संतश्री ने जनता को उन लोगों से सावधान रहने की सलाह दी जो उन्हें धर्मच्युत करने पर तुले हुए हैं। जो उन्हें तिलक लगाने, पायल पहनने तथा भगवान राम एवं हनुमानजी को मानने से रोकते हैं।

२ जनवरी को विशाल भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें बड़ी मात्रा में अन्न, वस्त्र, तेल, बर्तन आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं तथा मिठाइयों का वितरण किया गया। करुणासिंधु पूज्य बापूजी के द्वारा आर्थिक सहायता पाकर आदिवासियों, दरिद्रनारायणों में बड़ी प्रसन्नता देखी गयी।

उल्लेखनीय है कि पूज्य बापूजी अक्सर आदिवासियों, गरीब-गुरबों में रोजमर्रा की आवश्यक चीज-वस्तुएँ बाँटते हैं। जीवन की विविध समस्याओं का हल अपने सत्संग में बताते

हैं और भगवद्रस का पान भी कराते हैं। वे सेवा को सत्संग की सुवास से महकाकर और सत्संग को सेवा से पुष्ट कर कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग तथा व्यावहारिक एवं पारमार्थिक उच्च अनुभव को प्रत्यक्ष करा देते हैं। गरीबों, पीड़ितों एवं अभावग्रस्तों के पास स्वयं पहुँचकर भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सेवा की सुवास फैलाते हैं।

चीज-वस्तुओं, भोजन प्रसाद एवं दक्षिणा तथा सत्संग-कीर्तन का प्रसाद पाकर परितृप्त हुए गरीबों, पीड़ितों, अभावग्रस्तों को अपने दिल में सद्भाव भरकर तथा गठरी में चीज-वस्तुएँ भरकर उसे सिर पर रख ले जाते देख हमें जो संतोष मिल रहा था, वह अवर्णनीय है। समाजरूपी ईश्वर की सेवा का यह उत्तम अवसर पाकर सभी खुशहाल थे।

इन कार्यों के लिए चीज-वस्तुओं, रुपये-पैसों की आवश्यकता नहीं है। आश्रम के करकसर के व्यवहार से यह सारा दैवी कार्य हो रहा है। आश्रम के नाम से कोई भी व्यक्ति या संस्था चंदा माँगे तो तुरंत अमदावाद आश्रम को सूचित करें।

४ से ७ जनवरी तक दरिया-तट पर स्थित **वलसाड़ (गुज.)** नगरी में पूज्य बापूजी के सत्संग-श्रवण हेतु दरिया की भाँति जनसैलाब उमड़ पड़ा। यहाँ के शांत व स्व-अनुशासित श्रोताओं, भक्तों ने पूज्यश्री की नूरानी निगाहों का खूब लाभ उठाया।

देश के दूर-सुदूर क्षेत्रों से यहाँ आये भक्तों ने दरिया किनारे के शांत-प्राकृतिक वातावरण में, ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में ध्यान की उच्चतम गहराइयों का अनुभव किया।

७ जनवरी को देश भर से आये पूर्णिमा व्रतधारी भाई-बहनों ने सद्गुरुदेव का दर्शन-सत्संग प्राप्त कर व्रत खोला।

पूज्यश्री ने कहा : **''मंत्र में अद्भुत शक्ति है। मंत्र जपते समय जितनी अधिक एकाग्रता, तत्परता और श्रद्धा होती है तथा मंत्र के अर्थ में जितना शांत होते हैं उतना अधिक लाभ होता है। नीच कर्मों से बचकर मंत्रानुष्ठान करें तो ज्यादा लाभ होता है। आज कई युवा बेचारे प्रमाणपत्र लेकर भटकते रहते हैं, फिर भी नौकरी नहीं मिलती किंतु मंत्र का अनुष्ठान करे तो अनपढ़ व्यक्ति को भी आजीविका चलाने में तकलीफ नहीं होती। मंत्र की साधना से भाग्य के कुअंक मिट जाते हैं।** *मेटत कठिन कुअंक भाल के...''*

वलसाड़ (गुज.) से १२ कि.मी. दूर स्थित **मगोद डुंगरी** में पूज्य गुरुदेव के आगमन से बड़ा भव्य उत्सव हो गया। मगोद डुंगरी व आस-पास के भक्तों से दरिया-तट पर मानवी दरिया लहराने लगा। यहाँ पर बने सत्संग-भवन का पूज्यश्री के करकमलों से उद्घाटन हुआ। तत्पश्चात् यहाँ के निवासियों को सत्संग-अमृत का लाभ भी मिला।

समुद्र की गोद में छोटी-बड़ी नौकाओं में पूर्णिमा व्रतधारी भक्तों को बिठाकर नौका-विहार कराया गया। पूज्य बापूजी ने 'गंगा प्रसाद' जहाज में विराजमान हो पूनम के समुद्री ज्वार में नौका-विहार किया और हजारों भक्तों ने उनके पावन सान्निध्य में आह्लाददायक समुद्री सफर का लाभ लिया।

पूज्य बापूजी के सान्निध्य में इस अलौकिक दरियाई सफर से अभिभूत एक भक्त के अनुसार, **'एक ओर इस धरा का यह सागर हिलोरे ले रहा था तो दूसरी ओर हृदय में भक्ति-सागर उमड़ पड़ा था।'**

भजनों के सुमधुर गायन एवं 'हरि ॐ' के उद्घोष के साथ नौका-विहार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मगोद डुंगरी के लिए पूज्य बापूजी की यह भेंट, उनका सत्संग और नौका-विहार का कार्यक्रम यहाँ के निवासियों, पूर्णिमा व्रतधारियों एवं भक्तों के लिए एक अमूल्य नजराना बन गया था।

१० व ११ जनवरी को **जम्बूसर (गुज.)** में सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूज्यश्री ने अपनी सूत्रात्मक वाणी में कहा :

''**वाणी के पाँच दोष हैं। आज्ञा देने के लहजे से बोलना यह वाणी का एक दोष है। जोर-जोर-से बोलना यह दूसरा दोष है। अशुद्ध शब्दों - गालियों आदि का मिश्रण करना यह तीसरा दोष है। झूठ-कपट सहित बोलना यह चौथा दोष है। किसीको चुभे ऐसी वाणी बोलना यह पाँचवाँ दोष है।**

इसी प्रकार वाणी के पाँच सद्‌गुण हैं। हितकारी बोलना यह वाणी का पहला सद्‌गुण है, एक तपस्या है। आप हितकारी बोलोगे तो आपकी वाणी प्रभावशाली हो जायेगी। दूसरा सद्‌गुण है सारगर्भित बोलना। तीसरा सद्‌गुण है मौन, शांत रहना। चौथा है मधुर बोलना और पाँचवाँ है कपटरहित प्रिय बोलना। ये पाँच सद्‌गुण आपकी वाणी में आ जायें तो आपकी वाणी सामनेवाले पर जादुई असर करेगी।''

१४ जनवरी की सुबह पूज्यश्री **अमदावाद आश्रम** में पहुँचे। १५ से १८ जनवरी तक आयोजित उत्तरायण महापर्व हेतु अमदावाद पधारे पूज्य बापूजी ने आत्मरस के तृषार्त भक्तों को १४ जनवरी को भी आत्मरसामृत का पान कराया। पितामह भीष्म का प्रेरक जीवन-प्रसंग बताते हुए पूज्यश्री ने मानवमात्र को कर्म करते समय सावधान रहने का संदेश दिया। उन्होंने कहा : ''**मनुष्य का किया हुआ पुण्य-पापमय कर्म कभी भी उसका पीछा नहीं छोड़ता। जैसे गौ झुण्ड में से अपने बछड़े को ढूँढ़ लेती है, उसी प्रकार मनुष्यकृत् कर्म जन्मान्तर होने पर भी अपने फलदान हेतु कर्ता को खोज ही लेते हैं।**''

१५ व १८ जनवरी को आस्था चैनल द्वारा पूज्यश्री के सत्संग का सीधा प्रसारण हुआ, जिसका लाभ भारतसहित १६२ देशों के लोगों ने लिया।

गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी इस उत्तरायण शिविर के अवसर पर पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग का लाभ लिया तथा शुभाशीष पाये।

उन्होंने कहा : ''**मैं तो पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में प्रणाम करने आया हूँ।**

मैं मानता हूँ कि भक्ति से बड़ी दुनिया में कोई ताकत नहीं होती और भक्त हर कोई बन सकता है। हम सबको भक्त बनने की ताकत मिले, आशीर्वाद मिलें। मैं समझता हूँ कि संतों के आशीर्वाद ही हम सबकी बड़ी पूँजी होती है।''

साबर-तट पर उपस्थित शिविरार्थियों के विशाल सैलाब की ओर इशारा करते हुए मुख्यमंत्रीश्री ने कहा : ''**देश भर से आये हुए आप सबको, एक लघु भारत के रूप में मैं अपने सामने देख रहा हूँ। इस पवित्र धरती पर आये हुए आप सभीको मैं नमन करता हूँ। मन बार-बार नमन करता है, वंदन करता है, प्रणाम करता है इस महान ऋषि-परंपरा को। पूज्य बापूजी के चरणों में वंदन...**''

आइये, साबरमती नदी के पावन तट पर १४ से १८ जनवरी तक सम्पन्न हुए इस अविस्मरणीय ध्यान योग शिविर के कुछ अमृतबिंदुओं का पान करें :

सच्चा रस

१४ जनवरी : मनुष्यमात्र की माँग है सुखमय, सामर्थ्यशाली एवं शाश्वत जीवन। किंतु सच्चा रस नहीं मिलता तो लोग विकारी रस के पीछे भटकते रहते हैं। ज्यों-ज्यों विकारी रस ज्यादा भोगते हैं, त्यों-त्यों तन, मन, बुद्धि और सोच-विचार तुच्छ हो जाते हैं। ज्यों-ज्यों आप संयम करके सच्चे रस, सच्चे सामर्थ्य और सच्चे जीवन के नजदीक आते हैं, त्यों-त्यों आप अपनी नजर से तो उत्तम होते ही हैं, साथ ही दूसरों की नजर में भी आदरणीय होने लगते हैं।

निर्दुःख होने की कुंजी

१५ जनवरी : आज उत्तरायण के दिन आप

अपने जीवन को उत्तर की तरफ अर्थात् उन्नति की तरफ, प्रकाश की तरफ, ज्ञान की तरफ ले जाने का संकल्प करें। किसीके प्रति मनमुटाव हो गया हो तो उससे क्षमा माँग लें। यदि आप अपना मंगल चाहते हैं तो दूसरों की भलाई करें। **उस आदमी का दुःख कभी नहीं मिट सकता जो केवल अपने को ही सुखी रखना चाहता है। आप अपने सुख की ललक छोड़कर दूसरों के दुःख मिटाने में लग जायें तो दुःखहारी श्रीहरि की सत्ता आपको निर्दुःख कर देगी।**

ईश्वर से वार्तालाप

१६ जनवरी : *अपने लाड़ले साधकों को ध्यान की गहराइयों में ले जाते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :*

दिल की गहराई में जो झुरमुर-झुरमुर रस बरसानेवाला परमात्मा है, उसीसे आप अपना सीधा सम्बन्ध जोड़ो। उससे वार्तालाप करो, उससे प्रीति करो। वह अबोला है किंतु आप पीछे पड़ोगे और वह एक बार बोलता हो जायेगा तो आपको सदा मित्रवत् मार्गदर्शन देता रहेगा। केवल भीतर से ही आवाज देगा ऐसी बात नहीं है, बाहर भी प्रकट हो दर्शन देकर, प्रेरणा देकर अदृश्य हो जायेगा।

तीन चीजें

१७ जनवरी : तीन चीजों से सदा ममता करते रहना चाहिए : भगवान, साधना और सत्कर्तव्य। तीन से सदा मुक्त रहना चाहिए : नश्वर की ममता, आसक्ति और अहंकार। तीन से सदा बचना चाहिए : अभिमान, लोभ और दंभ। अपने हृदय में तीन चीजों को बिठा देना चाहिए : दया, क्षमा और विनय। नम्रता का सद्गुण महानता की कुंजी है, क्षमा का सद्गुण शांति की कुंजी है, दया का सद्गुण औदार्य और सरसता की कुंजी है।

निष्काम कर्मयोग

१८ जनवरी : *सत्संग के प्रथम सत्र में निष्काम कर्मयोग की महिमा बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा :*

कर्म करते-करते यदि आपको ईश्वर-प्राप्ति करनी है तो विचार करें कि 'हम जो कर्म कर रहे हैं उससे जो फल मिलेगा वह शाश्वत होगा या नश्वर ?' यदि नश्वर होगा तो छोड़ो उसे नश्वर संसार के हवाले... विचारो कि 'हमें तो कोई फल नहीं चाहिए, हमें तो परमात्मा चाहिए।' इससे नश्वर कामना मिटते ही कर्मयोग हो जायेगा और कर्ता शाश्वत सुख-शांति का अधिकारी बनने लगेगा।

यदि आप फल की आशा से कर्म करेंगे तो कर्मफल में बँधेंगे किंतु ईश्वर की प्रीति के लिए समाजरूपी नारायण की सेवा हेतु कर्म करेंगे तो आपके कर्म दिव्य हो जायेंगे।

आप जो देते हैं वह अनंत गुना होकर आपके पास आता है। इसलिए आप निष्काम भाव से दूसरों के आँसू पोंछ लीजिये। आप अपनी वाणी से, अपनी मति से निष्काम भाव से दूसरों के काम आ जाइये। इससे आपके अंतःकरण की शुद्धि होगी और आप महान हो जायेंगे।

जो प्रसिद्ध हैं और जिन्हें बड़ी सत्ताएँ प्राप्त हुई हैं, उनके द्वारा जीवन में कुछ-न-कुछ निःस्वार्थ कर्म हुए हैं, 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय...' से प्रेरित कर्म हुए हैं, तभी वे प्रसिद्धि तक पहुँचे हैं। वहाँ पहुँचकर यदि वे राग-द्वेष में फँस जाते हैं तो फिर बेचारे अशांत व बदनाम भी हो जाते हैं।

*

पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रम

(१) संतरामपुर (जि. पंचमहाल, गुज.) : ३१ जनवरी से २ फरवरी। जे. एच. मेहता हाईस्कूल. फोन : (०२६७५) २२०२३४, २२००५८.

(२) दिल्ली : ६ से ८ फरवरी। फोन : २५७२९३३८, २५७६४१६१.

पूर्णिमा दर्शन : ६ फरवरी २००४, दिल्ली में।
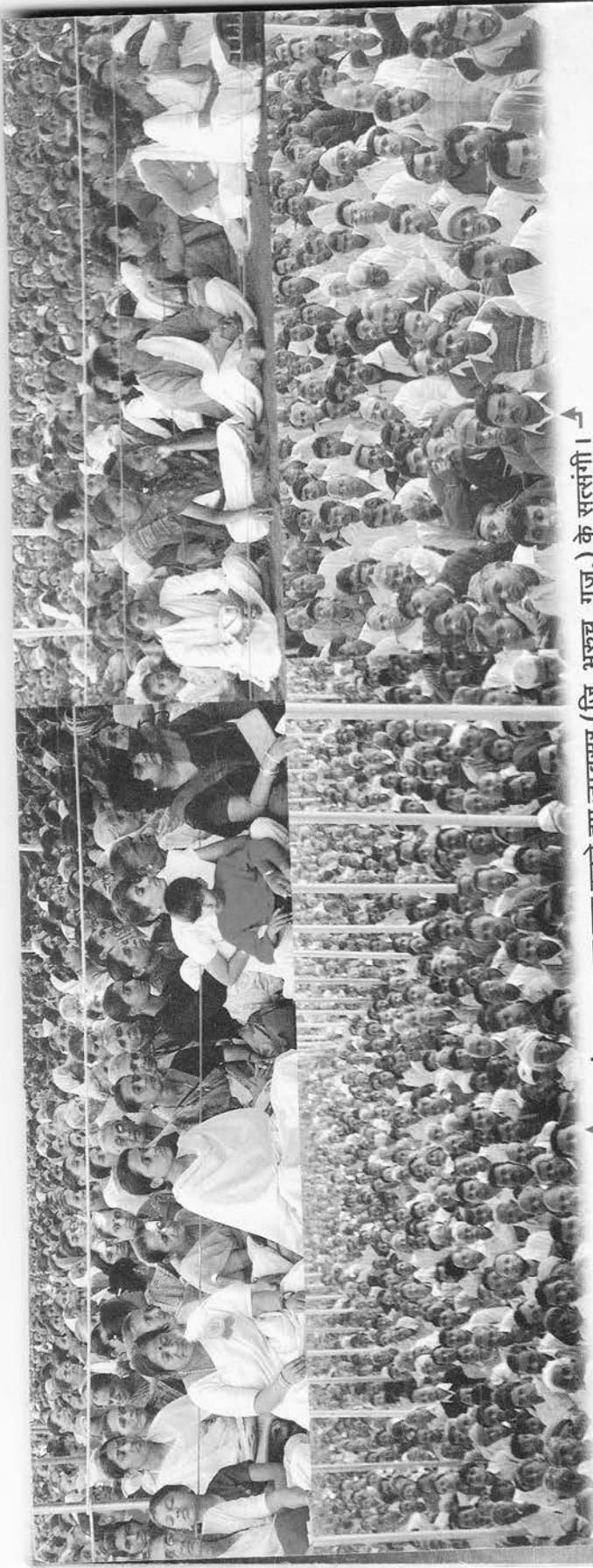
सत्संग-अमृत का पान करते हुए जम्बूसर (जि. भरुच, गुज.) के सत्संगी।

पूज्य बापूजी के सान्निध्य में ध्यान, कुंडलिनी जागरण, सत्संग, कीर्तन के प्रति लोगों का बढ़ता रुझान प्रकट करती विशाल जनमेदनी। (ध्यान योग शिविर, सूरत आश्रम)
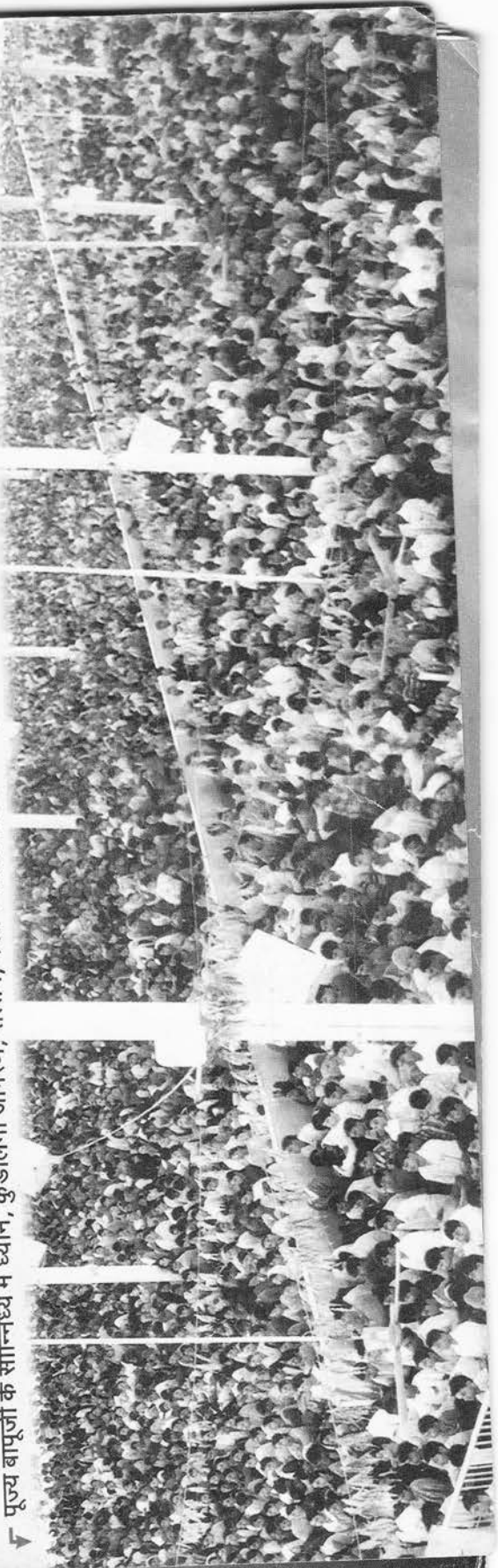
POSTING FROM MUMBAI 9 & 10th OF EVERY MONTH. ✻ FOREIGN POSTING 5 & 6 OF EVERY MONTH FROM AIRPORT P.O. - 400099. ✻ DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 POSTING FROM DELHI 10-11 OF EVERY MONTH.
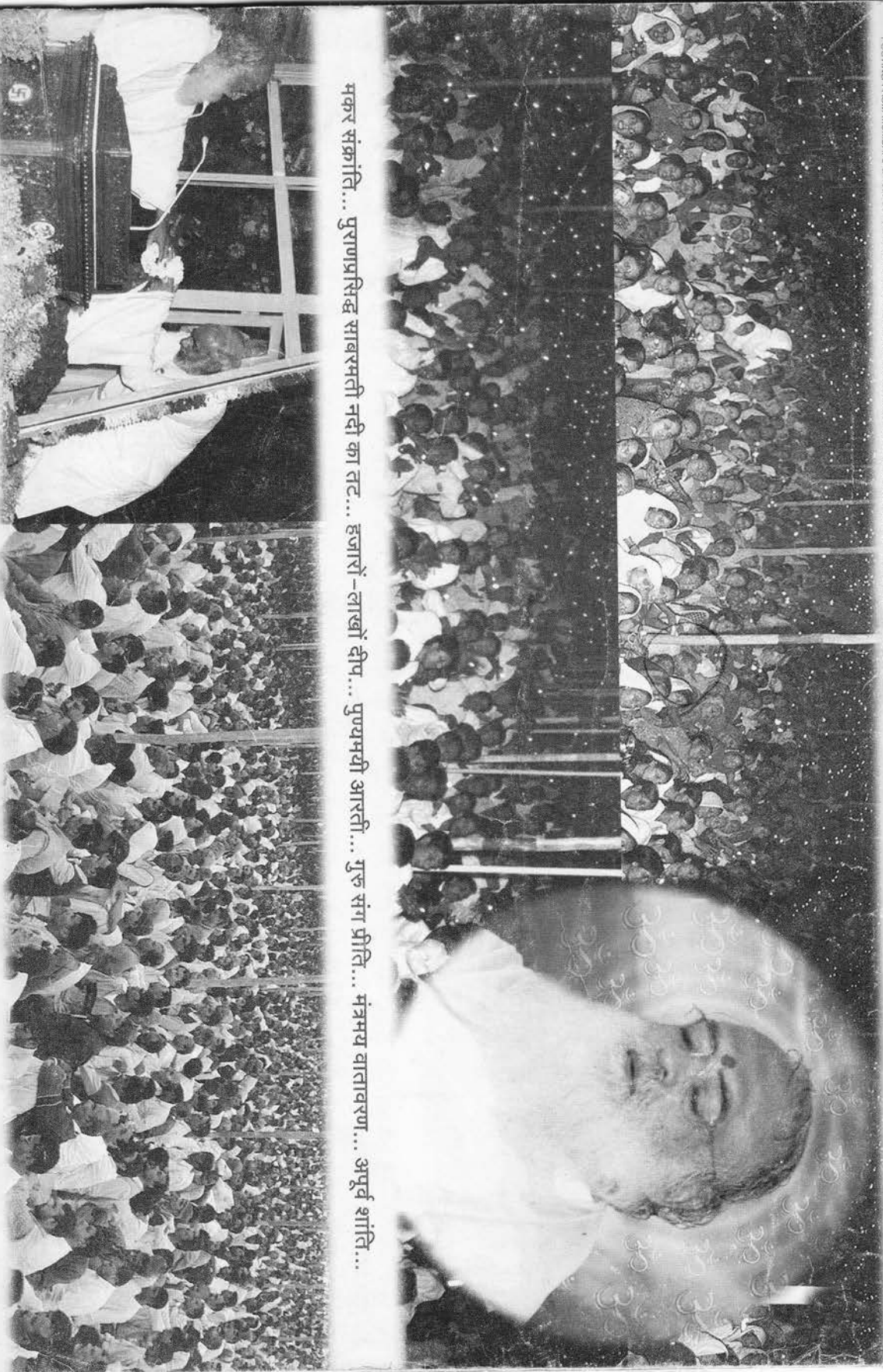
मकर संक्रांति... पुराणप्रसिद्ध साबरमती नदी का तट... हजारों-लाखों दीप... पुण्यमयी आरती... गुरु संग प्रीति... मंत्रमय वातावरण... अपूर्व शांति...

पूज्यश्री से आशीर्वाद एवं सत्प्रेरणा पाते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी।

उत्तरायण शिविर (अमदावाद आश्रम)